सत्यमेव जयते

मरुलेखा

वातायन

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
DEDICATED TO TRUTH IN PUBLIC INTEREST

वर्ष : 25 हिन्दी छमाही पत्रिका अंक : 69

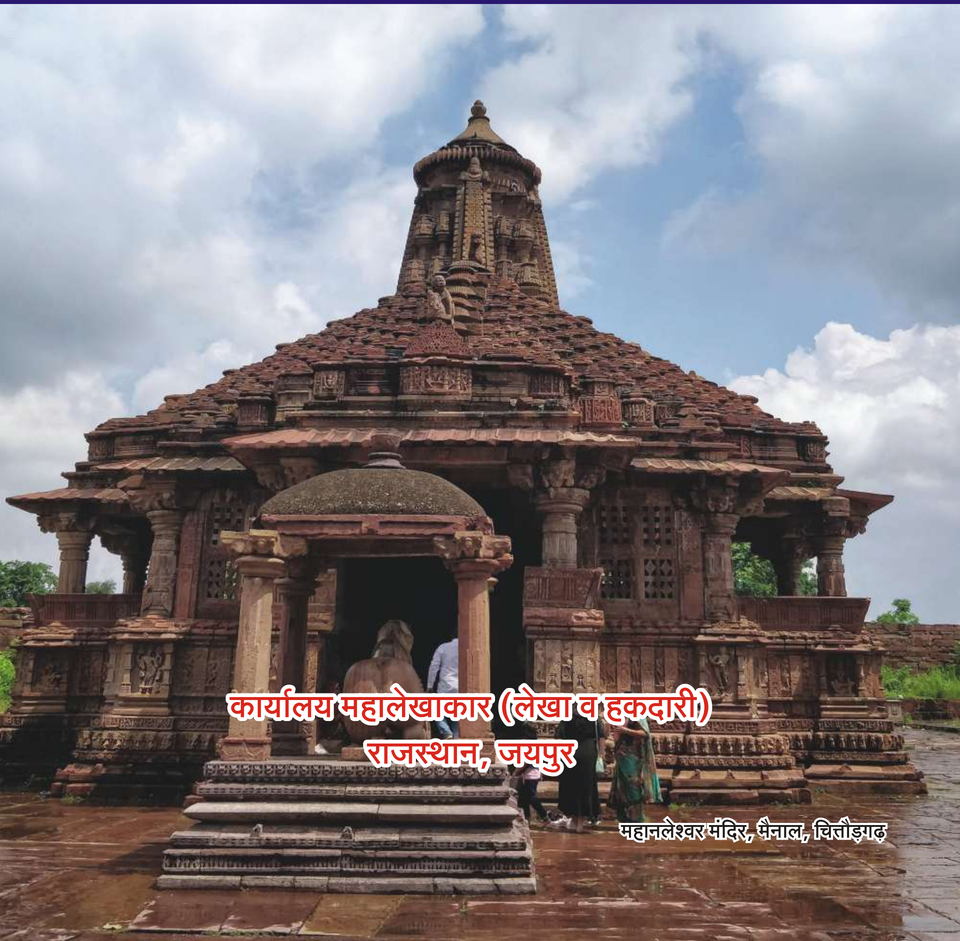

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) राजस्थान, जयपुर

महानलेश्वर मंदिर, मैनाल, चित्तौड़गढ़

सत्यमेव जयते

अर्चना गुर्जर
महालेखाकार (लेखा व हक.)
राजस्थान, जयपुर

* संरक्षक की कलम से *

कार्यालय की छमाही हिन्दी पत्रिका के इस 69वें अंक से पहली बार मैं आप सभी से जुड़ रही हूँ। मेरा मानना है कि अच्छा साहित्य इन्सान के जीवन को एक नई और अच्छी दिशा हमेशा से देता आया है और आगे भी देता रहेगा।

अपनी मातृभाषा में साहित्य का पठन, मन को बेहद संतोष प्रदान करता है इसलिए हिन्दी में रचनाओं का पठन, थके हुए मन को एक सुकून प्रदान करता है तथा ज्ञान की अभिवृद्धि में भी हमें एक पायदान और आगे ले जाता है। हमारे कार्यालय की पत्रिका इन लक्ष्यों की निरन्तर प्रतिपूर्ति करती आई है और भविष्य में भी करती रहेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

मुझे यह जानकर बेहद प्रसन्नता हुई कि एक ओर हमारी इस पत्रिका का निरन्तर प्रकाशन हो रहा है वहीं दूसरी ओर राजकाज में हिन्दी के प्रयोग की बेहतर स्थिति की वजह से, नराकास (का-1) जयपुर के स्तर पर गत कई वर्षों से हमारा कार्यालय प्रथम पुरस्कार प्राप्त करता आ रहा है। इसके लिए मैं समस्त कार्मिकों को बहुत-बहुत बधाई देती हूँ और इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों एवं सुधि पाठकों का हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। आशा है भविष्य में भी आप इस पत्रिका के प्रति अपना स्नेह ऐसे ही बनाए रखेंगे।

अर्चना गुर्जर

सत्यमेव जयते

मरुलेखा

वातायन

वर्ष : 25 अंक : 69

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) राजस्थान, जयपुर की अर्द्धवार्षिक पत्रिका

अप्रैल-2021 से सितम्बर-2021

प्रकाशक :

महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

राजस्थान

जयपुर - 302 005

मरुलेखा वातायन

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) राजस्थान, जयपुर की अर्द्धवार्षिक पत्रिका

संपादक मण्डल

* संरक्षक *

श्रीमती अर्चना गुर्जर

महालेखाकार (लेखा व हकदारी) राजस्थान, जयपुर

परामर्शदाता

श्री सोहन लाल साहू

वरिष्ठ उप-महालेखाकार (प्रशासन)

परामर्शदाता

श्री पृथ्वीपाल सिंह कानावत

वरिष्ठ उप-महालेखाकार (लेखा)

प्रधान संपादक

श्री जय सिंह रैगर

वरिष्ठ लेखाधिकारी

संपादक

श्रीमती रीतिका मोहन

हिन्दी अधिकारी

प्रबन्ध संपादक

श्री मुरलीधर भगत

वरिष्ठ लेखाधिकारी

✻ अनुक्रमणिका ✻

क्र.सं.	शीर्षक		रचनाकार	पृष्ठ सं.
	संरक्षक की कलम से			
	संपादकीय			
	आपके पत्र			
	गृहमंत्री का संदेश			
1.	नारी शक्ति	कहानी	मुरलीधर भगत	15
2.	राजभक्त राजकुमार	संकलन	बालकृष्ण शर्मा	17
3.	सृजनशील कथाकार के दर्शन की श्रृंखला : काल चिंतन	संकलन	रीतिका मोहन	19
4.	तनाव से कैसे बचें	लेख	इति शर्मा	22
5.	आईना	कविता	मनोज कुमार	24
6.	शत तन्त्री वीणा : तत वाद्य वीणा का एक स्वरूप	लेख	मुकुल दीक्षित	25
7.	आराधना	लेख	भारत भूषण शर्मा	28
8.	कृष्ण भक्त कुम्हार	संकलन	सरला भगत	29
9.	आरजू	कविता	नेहा शर्मा	30
10.	बहु या बेटी	कहानी	लवली शर्मा	31
11.	राम-नवमी	कविता	बनवारी लाल सोनी	37
12.	गीत	कविता	रामानन्द	40
13.	कैसी दुनिया है ये	कविता	सोहित शर्मा	41
14.	मेरा बचपन	कविता	प्रीति शर्मा	42

15.	कड़वा सच	कहानी	हर्षित मोहन	43
16.	सन्तुलित एवं पौष्टिक आहार	लेख	सुशील कुमार शर्मा	46
17.	शुद्ध आचरण ही जीवन है	लेख	पदम चन्द गांधी	48
18.	हम राजस्थानी	कविता	मदनलाल कोली	49
19.	हिंदी दिवस समारोह-2021		राजभाषा कक्ष	51
20.	हिन्दी पखवाड़ा-2021 के अन्तर्गत आयोजित प्रतियोगिताएं एवं उनके परिणाम		राजभाषा कक्ष	52
21.	सरकारी कामकाज मूल रूप से हिन्दी में करने पर मूल शब्द लेखन प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत पुरस्कृत कार्मिक		राजभाषा कक्ष	54
22.	राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश		राजभाषा कक्ष	55
23.	मुख व अंतिम पृष्ठ के छायाचित्र के छायाकार		देवराज खत्री	

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की अभिव्यक्ति से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मौलिक ही हैं ऐसा सुनिश्चित करना सम्पादक मण्डल के लिए संभव नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है।

संपादकीय

'किसी भी काम की शुरुआत के लिए कभी भी बहुत देर नहीं होती। न ही ऐसा करने के लिए स्थिति कभी बेहद खराब होती है। सब कुछ फिर से शुरु करने के लिए आपकी उम्र कभी बाधा नहीं बनती। यह हमेशा जारी रहने वाली प्रक्रिया है।

''युवराज सिंह'' जी द्वारा कही गई उक्त पंक्तियां प्रत्येक व्यक्ति पर लागू होती हैं। सच में किसी भी अच्छे/सही काम की शुरुआत कभी भी की जा सकती है। इसी तरह राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में भी कभी भी, कहीं भी, किसी भी समय/परिस्थिति में शुरुआत कर अपनी सक्रिय सहभागिता निभाई जा सकती है।

वर्तमान में केन्द्रीय कार्यालयों, बैंकों, निगमों, उपक्रमों इत्यादि में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार पत्राचार में 100% लक्ष्य होने की वजह से, लगभग कार्य हिन्दी में ही किया जाता है।

प्रत्येक कार्यालय में प्रकाशित की जाने वाली हिन्दी पत्रिकाएं भी, राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपनी सारगर्भित भूमिका निभाती हैं। साथ ही कार्यालयों में हिन्दी समारोह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन, राजभाषा विभाग द्वारा निर्देशित विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं एवं उनमें विजेताओं को पुरस्कृत किए जाने पर अहिन्दी भाषी कार्मिकों का भी रुझान हिन्दी की ओर हुआ है जो एक बेहद सुखद स्थिति है। हिन्दी के इस निरन्तर विकास को देखते हुए वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी राजभाषा के साथ ही साथ 'राष्ट्रभाषा' का भी स्थान भविष्य में प्राप्त कर लेगी।

रीतिका मोहन

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास) इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में हिंदी पत्रिका 'मरूलेखा वातायन' के 68वें अंक की ई-पत्रिका ई-मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा मुद्रण अति उत्तम है। श्री मुरलीधर भगत की कविता 'कुछ कमी सी है', श्री हर्षित मोहन की कहानी 'सपनों का गांव' एवं सुश्री सरला भगत की कहानी 'मन चंगा तो कटौती में गंगा' अत्यंत ही प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रूप से पठनीय हैं। श्रेष्ठ सम्पादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड का कार्यालय

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका मरूलेखा वातायन वर्ष 2020-21 का 68 वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा के उतरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखाधिकारी/ हिंदी प्रकोष्ठ

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)–द्वितीय, उत्तरप्रदेश, प्रयागराज

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका मरुलेखा वातायन के 68वें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद।

पत्रिका की सभी रचनायें ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक एवं राजस्थान के ऐतिहासिक इमारतों की विरासत की झलक प्रदान कर रहा है। कविता 'कुछ कमी सी है', लेख 'मनुष्य एवं मानसिक शांति', लेख 'खेल एवं रोजगार', लेख 'सृजनशील कथाकार के दर्शन की श्रृंखला: काल चिंतन' (श्री राजेन्द्र अवस्थी), कहानी 'सपनों का गांव', कविता 'गणतंत्र दिवस' उल्लेखनीय रचनायें हैं।

पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन हेतु पत्रिका परिवार एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनायें।

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंदी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.) हिमाचल प्रदेश, शिमला

आपके कार्यालय की ई–पत्रिका 'मरूलेखा वातायन' के 68वें अंक (वर्ष 2020–21) की प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, बिहार, पटना

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'मरुलेखा वातायन' के 68वें अंक का ई-संस्करण सधन्यवाद प्राप्त हुआ।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। श्री बालकृष्ण शर्मा का लेख 'मनुष्य एवं मानसिक शांति', श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव का लेख 'पानी रे पानी तेरा बहाव कैसा' एवं हर्षित मोहन की कहानी 'सपनों का गाँव' काफी रोचक, सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई का पात्र है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

वरीय लेखा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड का कार्यालय, राँची

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका 'मरूलेखा वातायन' के 68वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यन्त ही उच्चतर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिन्दी प्रकोष्ठ

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका मरुलेखा वातायन के 68वें अंक की ई प्रति मिली, एतदर्थ बधाई एवं धन्यवाद। राजभाषा के प्रचार-प्रसार और कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को निरन्तर बढ़ाने में 'मरुलेखा वातायन' अग्रणी भूमिका निभा रही है।

पत्रिका के इस अंक का आवरण अत्यंत आकर्षक है जो राजस्थान के बूंदी में अवस्थित ऐतिहासिक तारागढ़ किला पर केंद्रित है। यह राजस्थान के गौरवशाली इतिहास को जीवंत करता है। इस अंक में राजभाषा हिंदी से सम्बंधित प्रेरक सूक्तियों को भी प्रकाशित किया गया है जो बेहद प्रशंसनीय है।

'मरुलेखा वातायन' के इस अंक में संकलित रचनाएँ ज्ञानवर्धक और स्तरीय हैं। समसामयिक विषयों पर केंद्रित 'भूमंडलीय ऊष्मीकरण', 'वायुमण्डल : एक विवेचन' , 'खेल एवं रोजगार', 'मनुष्य एवं मानसिक अशांति' विशेष रूप से उल्लेखनीय एवं पठनीय हैं।

पत्रिका भविष्य में भी राजभाषा के संवर्द्धन के अभियान को और सशक्त रूप में आगे बढ़ाए, इसी मंगलकामना के साथ समस्त पत्रिका परिवार को पुनः बधाई और शुभकामनाएं।

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी, हिंदी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड

आपकी हिंदी ई-पत्रिका 'मरुलेखा वातायन' के 68वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय, संगृहणीय लगीं। आशा है कि आगे भी आपकी पत्रिका हमारा मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन करती रहेगी।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'मरुलेखा वातायन' के अंक 67 की एक प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए धन्यवाद। राजभाषा के प्रति निष्ठा के मूल्य के साथ पत्रिका के सतत प्रकाशन के लिए बधाइयाँ।

पत्रिका में समाहित सभी कविता, कहानी एवं आलेख न सिर्फ मनोरंजक हैं बल्कि ज्ञानवर्धक एवं रोचक भी हैं। श्री लहरी प्रसाद जी की 'मनुष्य जीवन में प्रकृति का अहम योगदान', श्री मुरलीधर भगत जी की 'माटी की महक' तथा श्री भारत भूषण शर्मा जी की 'व्यथा' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका की पृष्ठ सज्जा भी काफी आकर्षक है। पत्रिका के उत्तम सम्पादन के लिए संपादक मण्डल को बधाई।

पत्रिका की उतरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाओं हिहत

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी/प्रशासन)

कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा, रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'मरुलेखा वातायन' के 67वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है।

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं साज-सज्जा उत्कृष्ट है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ अति-प्रासंगिक, ज्ञानवर्धक एवं स्तरीय हैं। श्री बालकृष्ण शर्मा का लेख 'पत्र प्रारूप लेखन' सूचनाप्रद एवं उपयोगी है, श्री भारत भूषण शर्मा की कहानी 'व्यथा' अत्यधिक प्रेरणादायक है। श्री हर्षित मोहन एवं ध्रुव नौटियाल की कहानियाँ क्रमशः 'सिसकती जिंदगी' एवं 'सोचो' अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक महोदया के अनुमोदन से जारी किया जा रहा है।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अमित शाह

AMIT SHAH

गृह और सहकारिता मंत्री

HOME & COOPERATION MINISTER

भारत सरकार

GOVERNMENT OF INDIA

प्रिय देशवासियों!

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

'मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।'

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलतः इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियों को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

''जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।''

भाइयों, बहनों! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/विभागों/उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। 'ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

नई दिल्ली, 14 सितंबर, 2021

अमित शाह

नारी शक्ति

मुरलीधर भगत
वरिष्ठ लेखाधिकारी

सरला जैसे ही नींद से जागी मैं गुलाब का फूल और एक लिफाफा लिए सामने खड़ा था। सरला विस्मयी उनींदी आंखों से देखते हुए सोचने लगी आज कौनसी तारीख है? ना जन्मदिन, ना शादी की साल गिरह, फिर ये फूल...?

मुस्कराते हुए बोली ए.जी. क्या बात है ये फूल किसलिए? राम ने हंसते हुए जवाब दिया तुम तो इस घर का गुलाब हो जो सदा महकती रहती हो। कभी कभार मुझे भी यूं ही बेवजह कुछ करने को मन किया करता है तुम्हारे लिए, कहते हुए फूल व लिफाफा मैंने आगे बढाया, सरला ने बड़े प्यार से फूल साइड टेबिल पर रख दिए और लिफाफा उत्सुकता से खोलने लगी, अन्दर हवाई यात्रा के दो टिकट देखकर हैरान हो गई। ये तो आपके और मेरे नाम के टिकट हैं, सरला बोली। जी हां, राम ने हंसते हुए कहा, केन्द्रीय कार्यालय में काम करने का यही फायदा है। एल.टी.सी. ड्यू हो गई है, क्यों न ऊटी चला जाए फिर वापसी में बिटिया के घर मुम्बई भी होते आएंगे, तैयारी शुरू हो गई। ऊटी से अधिक तो बिटिया से मिलने का उत्साह था। सरला फूली नहीं समा रही थी। बिटिया और उसके पूरे परिवार की मनपसन्द चीजें इक्टठी करने लगी और पैंकिग शुरू हो गई।

नियत दिन फ्लाईट लेकर हम दोनों ऊटी पहुंच गए। वहां एक शानदार रिसोर्ट में ठहरने का इन्तजाम था। 3-4 दिन वहां के दर्शनीय स्थल देख कर पुराने दिन याद आ गए। वहां का मौसम अत्यन्त लुभावना था, प्रकृति के पास आकर मन बहुत प्रफुल्लित हो गया था। रहने व खाने का अच्छा इन्तजाम था। 3 दिन कैसे बीत गए पता ही नहीं चला। चॉकलेट फैक्ट्री से कई नई-नई तरह की चाकलेट बिटिया के लिए भी खरीद ली।

अगले दिन की फ्लाईट से हम दोनों मुम्बई आ गए। बिटिया, कुंवर साहब एवं उसके ससुराल वालों से मिलकर बहुत अच्छा लगा। शाम को मुम्बई दर्शन के लिए भी गए। सब कुछ बहुत अच्छा रहा।

अगले दिन सुबह चाय नाश्ता कर हम दोनों राजेश मामा (जो मुम्बई में रहते थे) के घर जाने हेतु रवाना हुए। गत कई वर्षों से उनसे सम्पर्क भी नहीं हो पा रहा था। रास्ते में सरला ने बताया कि राजेश मामा अपने सात भाइयों में से सबसे होनहार थे और गोरखपुर की नामी यूनिवर्सिटी से इन्जीनियरिंग पास की थी और उनका प्लेसमेंट तुरन्त हो गया था। उन्होंने अपनी बुद्धिमानी से काफी प्रगति की तत्पश्चात उनकी सोनिया मामीजी से शादी हो गई। हम सब विवाह में सम्मिलित हुए थे । तब सरला ग्रेजुएशन कर रही थी, उसके बाद राजेश मामा से मिलना नहीं हो

पाया था। शीघ्र ही हम दोनों मामाजी के घर पहुंच गए। मुम्बई जैसी जगह पर आलीशान फ्लैट देखकर अच्छा लगा कि मामाजी ने अच्छी तरक्की कर ली है। 5-7 मिनट में ही सोनिया मामी जी आईं जिन्हें देखकर सरला से रहा न गया और वह उनसे लिपट गई। पूछा, कैसी हैं आप? कुछ उम्र का पड़ाव था या कुछ और? मामीजी का खिला-खिला चेहरा अब मुरझा गया था, कुछ उदास और थकी-थकी सी लगी। सरला ने पूछा मामीजी राजेश मामा कहां हैं? आप सब कैसे हैं? आपके दो बेटे थे वो बड़े हो गए होंगे। सरला के मन में कई सवाल थे।

मामीजी दोनों को मामाजी के कमरे में ले गई। जहां मामाजी बिस्तर पर लेटे हुए थे। उनका शरीर एकदम दुबला, आंखें धंसी हुईं, सिर पर जो घने बाल हुआ करते थे वो भी अब नहीं थे। सरला बेहद हैरत में थी कि इतने में मामाजी ने आंखे खोलते हुए पूछा कौन है? सरला ने अपने आपको संयत करते हुए कहा, मामाजी मैं सरला, जयपुर से, मामाजी के ललाट पर सोच की लकीरें साफ दिखीं। अच्छा-अच्छा सरला बिटिया आई है। कैसी है। सरला ने कहा मैं तो ठीक हूँ लेकिन आपको ये क्या हुआ। हमें उस कमरे से यह कहकर सोनिया मामीजी बाहर लाई कि पहले कुछ खा लो फिर मामा से बात कर लेना और बाहर लाकर जवाब सोनिया मामीजी ने दिया, उन्होंने बताया कि शादी के बाद कई साल इन्होंने कम्पनी में काम किया, हमारे दो बेटे हुए फिर हम मुम्बई आ गए और इन्होंने अपने एक मित्र के साथ अपनी कम्पनी खोली जिसमें बेहतरीन केसरोल बनाए जाते थे। मेहनती तो थे ही, इन्होंने दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की की और कम्पनी की शाखाएं विदेश में भी खोलीं। इनके मित्र ने विदेश की कम्पनी का काम सम्भाला। 14 वर्ष कैसे निकल गए पता ही नहीं चला।

अचानक एक दिन बड़ा बेटा जो 21 साल का हो चुका था, रोड क्रास करते समय एक्सीडेन्ट में मारा गया और वह हमें अकेला छोड़कर चला गया। इनका मोह बड़े बेटे में ज्यादा था। उस दिन से ये चुप-चुप रहने लगे, बाहर कुछ नहीं कहते लेकिन अन्दर ही अन्दर घुलने लगे। कई बीमारियों ने इन्हें आ जकड़ा। डायबिटीज, बी.पी., न्यूरो और अब कैन्सर ने तो कमर ही तोड़ दी। छोटे बेटे को कहीं जाने नहीं देते। अतः मैं ही घर और कम्पनी सम्भालती हूँ साथ ही अस्पताल की भाग दौड़। छोटा बेटा कालेज की पढाई कर रहा है इसलिए उसे ज्यादा डिस्टर्ब नहीं कर सकते इसलिए पास की कच्ची बस्ती से एक गरीब औरत को यहां रखा है मदद के लिए।

मामीजी की व्यथा सुन सरला दुखी तो हुई साथ ही गौरवांवित भी हुई। सरला ने मेरी ओर देखा। तब मैंने मामी जी से कहा, मामी जी आप जैसी नारी शक्ति को नमन है। आप सही मायने में रानी लक्ष्मी बाई हैं, जिन्होंने देश के लिए जान लगा दी और आपने घर-परिवार के लिए। हम ईश्वर से प्रार्थना करेंगे कि वे आपको शक्ति प्रदान करें।

उनके अपने घर परिवार के प्रति प्रेम और समर्पण से सरला पूर्णतया अभिभूत हो गई थी। लौटते समय सारी परिस्थितियों को देखते हुए हमें अपने अन्दर भी एक नई ऊर्जा महसूस हुई और नारी शक्ति, समर्पण, त्याग व मेहनत का जो साक्षात्कार किया उससे लगा कि वास्तव में यह सब एक नारी के ही बस की बात है। ऐसे ही नहीं दुनिया नारी शक्ति को पूजती है।

राजभक्त राजकुमार

संकलन : बालकृष्ण शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी

एक राजा था। वह बहुत दयालु, न्यायप्रिय व शक्तिशाली था। उसके विशाल राज्य में चारों ओर समृद्धि-ही-समृद्धि थी। उसके न्याय, बुद्धि-कौशल व दयालुता की कहानियाँ चारों ओर फैली हुई थीं।

एक दिन एक राजकुमार उसके राजदरबार में उपस्थित हुआ और बोला, महाराज! मैं आपके पड़ौसी राज्य के राजा का पुत्र हूँ परन्तु मेरे दुर्भाग्य के कारण मेरे पास अब कुछ भी नहीं है। मैं यहाँ आपका सेवक बनने के लिए आया हूँ। मैंने आपके दयालु स्वभाव के विषय में बहुत कुछ सुना है। कृपया मुझे अपनी सेवा का अवसर देकर कृतार्थ कीजिए। तुम क्या चाहते हो? तुम्हारी क्या योजना है और तुम मेरी सेवा कैसे कर सकते हो? राजा ने राजकुमार से पूछा।

महाराज, मेरे पास अपना शक्तिशाली शरीर व अपनी स्वामी-भक्ति है। मैं इसे आपको सौंपना चाहता हूँ और इसके बदले में आपसे प्रतिदिन पांच-सौ स्वर्ण मुद्राओं की आशा करता हूँ।

राजकुमार के मुँह से ऐसी बातें सुनकर राजा हैरान रह गया। वह बोला, मुझे क्षमा करना, राजकुमार! मैं तुम्हारी आशा के अनुरूप इतना वेतन नहीं दे सकता। मैं यह तो नहीं कह सकता कि तुम इसके योग्य हो या नहीं, पर मेरे विचार से यह वेतन तो बहुत अधिक है। मैं तुम्हारी बात नहीं मान सकता।

राजकुमार ने राजा को झुककर प्रणाम किया और चुपचाप वहाँ से चला गया। राजकुमार के जाते ही प्रधानमंत्री राजा से बोला, महाराज, मेरे विचार से हमें उस युवक को कुछ दिन के लिए रख लेना चाहिए और उसे पांच-सौ स्वर्ण मुद्राएं प्रतिदिन दे देनी चाहिए तथा यह देखना चाहिए कि वह क्या कर सकता है? उसकी क्षमता कितनी है?

प्रधानमंत्री की बात सुनकर राजा ने राजकुमार को वापस बुलाने के लिए अपने सैनिकों को आदेश दिया। इस तरह राजा राजकुमार को प्रतिदिन पांच सौ स्वर्ण मुद्राएं देने को राजी हो गया। साथ ही राजा ने अपने गुप्तचरों को राजकुमार पर नजर रखने का आदेश दिया ताकि यह पता लगाया जा सके कि वह अपने धन का किस प्रकार उपयोग करता है।

रात्रि के समय राजा के गुप्तचर वापस राजा के पास आए और बोले, महाराज, राजकुमार ने रहने के लिए एक बहुत छोटा कमरा लिया है। उसके साथ उसकी पत्नी व एक पुत्र भी है। उसने अपना अधिकांश धन पूजा-पाठ जैसे धार्मिक कार्यों में खर्च कर दिया और थोड़ा धन गरीबों तथा ब्राह्मणों को दान कर दिया। उसके पास अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए बहुत ही थोड़ी सी स्वर्ण मुद्राएँ शेष बची हैं। राजा द्वारा दी गई स्वर्ण मुद्राओं को राजकुमार प्रतिदिन इसी प्रकार खर्च करता था। राजकुमार के इस स्वभाव से प्रसन्न होकर राजा ने राजकुमार को अपना संरक्षक नियुक्त कर दिया।

एक रात जब राजा गहरी नींद में सो रहे थे। राजकुमार राजा की सुरक्षा के लिए कक्ष के द्वार पर बैठा था। अचानक राजा को किसी स्त्री के रोने की आवाज सुनाई दी। राजा ने राजकुमार को बुलाया और उसे उस स्त्री को

ढूंढकर उसके रोने के कारण का पता लगाने को कहा। राजकुमार के चले जाने के पश्चात् राजा ने अपनी तलवार उठाई और राजकुमार के पीछे-पीछे चलने लगे। राजकुमार यह नहीं जानता था कि राजा भी उसके पीछे-पीछे आ रहा है।

कुछ दूर तक चलने के बाद राजकुमार को एक स्त्री दिखाई दी। राजकुमार ने उससे पूछा, हे देवी, आप कौन हैं? आप इतनी रात्रि को इस प्रकार अकेली बैठी क्यों रो रही हैं? क्या मैं आपकी किसी प्रकार मदद कर सकता हूँ?

स्त्री ने कहा, हे पुत्र, मैं इस राज्य की लक्ष्मी हूँ। मैं यहाँ की समृद्धि व धन की देवी हूँ। मैं इस राज्य में पिछले कई वर्षों से रह रही हूँ। अब मुझे इस राज्य को छोड़कर जाना होगा, परन्तु मैं इस राज्य को छोड़ना नहीं चाहती।

इस पर राजकुमार बोला, ओह! यह तो बहुत दुखद बात है। क्या ऐसी कोई तरकीब है जिससे आप यहाँ से न जाएँ?

स्त्री ने जवाब दिया, हाँ, इसका उपाय तो है पर वह उपाय बहुत कठिन है। इसके लिए तुम्हें देवी सर्वमंगला को अपने पुत्र की बलि चढानी होगी। यदि तुमने उन्हें प्रसन्न कर दिया तो उनकी आज्ञा से मैं यहाँ हमेशा के लिए रह सकूँगी।

ऐसा कहकर वह स्त्री अदृश्य हो गई। राजकुमार बोला, ठीक है, देवी! अपने राजा को बचाने के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूँ। ऐसा कहकर राजकुमार वहाँ से सीधे अपने घर गया और उसने अपनी पत्नी व पुत्र को जगाकर उठाया। उसके साथ जो भी हुआ था वह सब उसने उन्हें बता दिया। राजकुमार का आठ वर्षीय पुत्र बोला, पिता जी, मैं इस त्याग के लिए तैयार हूँ। दयालु राजा हमारे भगवान हैं। आप मुझे जैसी भी आज्ञा देंगे, मैं वैसा ही करूँगा। मैं राजा के लिए अपने प्राणों का बलिदान खुशी-खुशी दे सकता हूँ। राजकुमार की पत्नी ने भी मुस्कुराते हुए इजाजत दे दी। तीनों मिलकर एक साथ सर्वमंगला देवी के मंदिर में गए। प्रार्थना करने के पश्चात् राजकुमार ने अपने पुत्र का सिर काट दिया फिर राजकुमार बोला, हे देवी, राजलक्ष्मी के द्वारा बताए उपाय के अनुसार उन्हें अपने पास रोकने के लिए मैंने अपना पुत्र आपको भेंट कर दिया। अब मेरे जीने का कोई आधार नहीं रहा, इसलिए मैं भी अपने आपको भेंट चढ़ाता हूँ, इसे स्वीकार करें। ऐसा कहकर राजकुमार ने अपना सिर भी काट दिया। इसके पश्चात् राजकुमार की पत्नी ने भी सर्वमंगला देवी को अपनी बलि अर्पित कर दी।

राजा वहीं छिपकर यह सब देख रहा था। उसके मन में सुखद व दुखद दोनों प्रकार की भावनाएं उमड़ रही थीं। वह मंदिर में गया और बोला, देवी, आपने मुझे इतना राजभक्त सेवक दिया था और उस कुलीन आत्मा ने मेरे लिए अपने व अपने परिवार के प्राणों का त्याग कर दिया। राजकुमार के बिना मेरा जीवन निरर्थक है। अतः आप मेरी भेंट भी स्वीकार करें।

ऐसा कहकर राजा ने तलवार निकाली और अपने सिर को भी भेंट करने को तैयार हो गया। तभी अचानक देवी सर्वमंगला वहाँ प्रकट हुईं और बोलीं, हे राजन्, रुको! तुम एक महान् राजा हो। मैंने तुम्हारे न्याय व दया के अनेक किस्से सुने थे। साथ ही साथ तुम्हारे सेवक भी बहुत पवित्र आत्माएँ हैं सो मैं तुम्हारे व तुम्हारे जैसी पवित्र आत्मा वाले लोगों का अशुभ कैसे सोच सकती हूँ? मैं तुम्हारी त्याग एवं भक्ति की भावना से प्रसन्न हूँ इसलिए मैं राजकुमार व उसके परिवार को जीवन दान देती हूँ। आपकी राजलक्ष्मी अब आपके राज्य को छोड़कर कहीं नहीं जाएगी। ऐसा कहकर देवी सर्वमंगला वहाँ से अदृश्य हो गईं।

राजकुमार व उसका परिवार पुनः जीवित हो गए। दयालु राजा ने राजकुमार को गले लगाया व अपना आधा राज्य उसे सौंप दिया। दोनों अब मित्र बन गए और उन्होंने कई वर्षों तक उस राज्य पर खुशी-खुशी राज किया।

सृजनशील कथाकार के दर्शन की श्रृंखला : काल चिंतन (श्री राजेन्द्र अवस्थी)

संकलन : रीतिका मोहन
हिन्दी अधिकारी

सबसे बड़ी कमज़ोरी

– जानना चाहता हूं : व्यक्ति की सबसे बड़ी कमजोरी क्या है?

– कमजोरी की खोज में यदि कोई निकल जाये, तो उसे शायद ही कहीं 'शक्ति' दिखाई देगी; प्रश्न दृष्टि का है– खोजना है तो आदमी की सबसे बड़ी शक्ति को खोजना चाहिए। एक बार शक्ति खोज ली तो अपने आप दूसरा उत्तर मिल जाएगा।

– यक्ष प्रश्नों की सार्थकता जीवन के अंगों को खोजने में रही है।

– आइए, हम कुछ प्रश्न करें और उत्तर भी दें :

– हम बाहर से आए हैं, आप भीतर हैं, किसे पहले अभिवादन करना चाहिए?

– बाहर से आए व्यक्ति को, क्योंकि वह समाजरूपी 'भीतर' संज्ञा में प्रवेश चाहता है।

– 'भीतर' व्यक्ति को क्या प्रवेश न देने का अधिकार है?

– यह उसके अधिकार-क्षेत्र के बाहर है।

– इससे कानून और व्यवस्था को खतरा नहीं है?

– प्रवेश से कहीं खतरा नहीं होता, खतरा उसके बाद स्थितियां पैदा करती हैं।

– अर्थ हुआ 'बाहर' एक व्यक्ति है, 'भीतर' एक समाज है ; समाज में व्यक्ति का प्रवेश अवरुद्ध नहीं किया जा सकता।

– खतरा व्यक्ति के सामाजीकरण में परिवर्तित होते ही उसके कार्यों की इकाई से शुरू हो जाता है।

- गहरी झील के विस्तार से सभी कुछ अदृश्य हो सकता है, तब भी झील की इकाई स्थिर रहेगी।
- झील रहस्यमय आवरण का आगार हो सकती है, उसकी पहचान अंधेरे में तैरती दृष्टि से नहीं अपितु अंधकार को विद्रुप करनेवाली तीक्ष्ण दृष्टि से होती है।
- झील का जल जब तक निर्मल होगा, 'भीतर' बैठा समाज अपना दर्पण देखता रहेगा, लेकिन 'बाहर' का सौंदर्यप्रेमी अतिथि वहां कमल के फूल नहीं देख सकता। कमल के लिए कीचड़ और काई चाहिए।
- बृहत्तर जन-कल्याण के लिए अपनी सौंदर्य-जिज्ञासा पर काबू पाया जा सकता है।
- फूलरहित गहरी झील का नील आवरण अपने आप में एक ऐसा बृहत्तर संगीत है जिसमें सभी राग-रागनियों को सुना जा सकता है और एक नये सौंदर्यबोध की सृष्टि की जा सकती है।
- दृश्यमान जगत ही सर्वस्व नहीं, उसके परे भी कुछ है जो हमारा नियंता है।
- हम सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है। इसलिए हमारे कार्य सर्वव्यापी सीमा में पहुंचकर ही पुरस्कृत होते हैं।
- ऐसे बृहत कल्याण के लिए ही शिव जी ने विषपान किया था और सबके लिए पान किया गया विष भी शक्तिरहित हो गया।
- मीरा ने दूसरों के कलंक की अर्थहीन दृष्टि को वैसे ही विस्फोटित किया था, जैसे नन्हा-सा अंकुर विशाल धरती के गर्भ को फाड़कर चुपचाप ऊपर आ जाता है और अपनी उपस्थिति से विशाल भू के बृहतांचल में अपनी निजी सार्थकता का लौहस्तंभ खड़ा कर देता है।
- राम ने आसन्न-विपन्न स्थितियों में वह मार्ग चुना जो सार्वभौमिक था।
- शंकराचार्य ने सामाजिक सत्ता स्वीकारी, वे सिद्ध हुए, पूजनीय बने।
- इनके विपरीत हिटलर ने अपनी नितांत एकांत सत्ता को प्रस्थापित कर बाकी सब कुचल देना चाहा। परिणाम- घृणा।
- व्यक्ति वही है; संभवतः उसके लक्ष्य और सिद्धांत भी भिन्न नहीं होंगे, लेकिन उनके परिणाम ही उसकी नियति के सार्थक चरण-चिह्न बनते हैं।
- महायोगी बुद्ध ने समस्त सौंदर्य-चेतना को जन-कल्याण के लिए जिस दिन समिधा बनाकर यज्ञ के हवाले किया था, उसी दिन सत्य के क्रूर आवरण से प्रतिध्वनित हुआ था : 'हम हैं किंतु जो और है वह मात्र हमारे लिए नहीं है।'

- युद्धरत देश गुलाब के फूलों को कुचलकर उनके ऊपर से यदि गगनभेदी तोपें और टैंक ले जाता है तो वह हत्यारा नहीं है, क्योंकि विजय के बाद वही तोप और टैंकों का श्रृंगार गुलाब से करता है और जलसमूह के स्वरों से पूजित होता है।
- स्पष्ट हुआ, व्यक्ति की सबसे बड़ी शक्ति है : दूसरी दृष्टि!
- कमजोरी का अहसास तभी उजागर हो जाता है : अपनी दृष्टि या उसका निजी स्वार्थ!
- स्वार्थ वह जो हर दूसरी दृष्टि को फोड़ देना चाहता है।
- स्वार्थ वह जो काल और स्थान की सीमा के ज्ञान के बावजूद केवल अपनी आंखों से देखता है।
- ऐसा स्वार्थी व्यक्ति कबूतर की तरह बिल्ली को देखते ही मंदबुद्धि होकर आंखें बंद कर लेता है और तब उसे पता ही नहीं चलता कि आसपास क्या हो रहा है।

हिंदी का प्रचार और विकास कोई रोक नहीं सकता

– पंडित गोविंद वल्लभ पंत

तनाव से कैसे बचें

इति शर्मा
लेखाकार

आज के इस युग में जहां चारों ओर प्रतिस्पर्धा का बोलबाला है ऑफिस हो, स्कूल हो, समाज हो हर तरह प्रतिस्पर्धा नजर आती है। इस प्रतिस्पर्धा के चलते यदि हम यह सोचें कि कोई व्यक्ति बिना तनाव के जी रहा है तो यह असम्भव है। अर्थात् आज हर व्यक्ति किसी न किसी प्रकार से तनाव में घिरा हुआ है। तनावों के बीच वह अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। तनाव एक ऐसी बीमारी है जो कई अन्य बीमारियों का कारण है। अन्य बीमारियों का उपचार तो फिर भी सम्भव है किन्तु तनाव का कोई इलाज नहीं है। आज तक ऐसी कोई दवा का आविष्कार नहीं हुआ है जिसके उपयोग से व्यक्ति का तनाव दूर हो सके और वह तनावमुक्त जीवन जी सके। इसके बावजूद भी व्यक्ति के अन्तर्मन में यह प्रश्न तो उठता ही है कि किसी भी प्रकार से तनाव से मुक्ति मिलनी चाहिए। तो इस प्रश्न का सबसे सही उत्तर हम खुद ही हैं। हम खुद ही तनाव को दूर कर सकते हैं। यदि हम तनाव से बचना चाहतें हैं तो इसके लिए हमें स्वयं ही प्रयास करना होगा।

हमें चाहिए कि हम अपने दुख के क्षणों में बीते हुए सुख के क्षणों को याद करें जिससे कि तनाव को कम करने में सहायता मिलेगी। बीते हुए कल या आने वाले कल के बारे में ज्यादा सोचने से बेहतर है आज के बारे में सोचें। यदि आज अच्छा है तो कल अपने आप अच्छा हो जाएगा। क्योंकि यह सच है कि कल कभी नहीं आता। यदि हमने आज पर नियंत्रण पा लिया तो फिर जीवन में तनाव की कोई जगह नहीं होगी।

कई बार समाज में रहते हुए हम अन्य व्यक्तियों से प्रतिस्पर्धा के कारण हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं, इस आदत से बचना चाहिए। हीन भावना के कारण हम बहुत ज्यादा तनाव में आ जाते हैं। इसलिए व्यक्ति को चाहिए कि वह आगे बढने के ख्वाब जरूर देखे, कोशिश भी करे लेकिन किसी अन्य से प्रतिस्पर्धा न करे। यदि किसी व्यक्ति में हीन भावना घर कर गई है तो उसको अपने से कमजोर व्यक्ति से तुलना करनी चाहिए। इस तरह शायद तनाव में कुछ कमी आये।

अपनी कमियों के बारे में यदि हम खुद सोचेंगे और उनको दूर करने के प्रयास करेंगे तो निश्चित ही तनाव में कमी आयेगी। यदि किसी व्यक्ति से हमें परेशानी हो रही है तो हम कोशिश करें कि उसकी हरकतों को नजरअंदाज करें। यदि हम उससे बराबरी करेंगे तो उसका तो पता नहीं क्या होगा लेकिन हम जरूर तनाव में आ जायेंगे।

यदि हम ऑफिस में काम कर रहें हैं तो हमें कोशिश करनी चाहिए कि घर की समस्याओं पर हमारा ध्यान न जाए क्योंकि इससे ना तो ऑफिस का काम हो पाएगा और ना ही घर की समस्या का समाधान। एक समस्या के चलते हम निश्चित ही दूसरी समस्या से घिर जायेंगे और घर आने के बाद हमें ऑफिस की समस्याओं को भूलने का प्रयास करना चाहिए। हमें ऑफिस के काम के बारे में ऑफिस परिसर में ही सोचना चाहिए। ऐसा करने से हम तनाव को काफी हद तक अपने से दूर रख सकते हैं।

कुछ समस्याऐं ऐसी होती है जीवन में जो हमारी लाख कोशिशों के बावजूद नहीं सुलझती हैं, ऐसी समस्याओं को वक्त के हवाले कर देना चाहिए। ऐसी समस्याओं का समाधान वक्त आने पर अपने आप हो जाता है। उन समस्याओं से लगातार जुझते रहने से हम कई और नई समस्याओं को जन्म दे देंगे लेकिन उस समस्या का समाधान नहीं होगा।

तनाव दूर करने के लिए एक उपाय यह भी है कि हमें दूसरों की खुशियों में खुशी से शामिल होने की कोशिश करनी चाहिए। साथ ही दूसरों को खुश रखने का भी प्रयास करना चाहिए। यदि हम पूरे दिन में एक व्यक्ति को भी खुश कर पाएं तो निश्चित ही हम अपने तनाव पर विजय प्राप्त कर सकेंगे। दूसरे को खुशी देने से जो खुशी मिलेगी वह तनाव को हमारे पास नहीं आने देगी।

मैं मानती हूं कि आज के युग में ये सभी उपाय कहने में आसान हैं, अपनाने में बहुत मुश्किल लेकिन हम कोशिश तो कर ही सकते हैं।

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है

– कमलापति त्रिपाठी

आईना

मनोज कुमार
लेखाकार

पढकर अपना लिखा मुस्कुराता हूं मैं
तन्हाई में बैठ गुनगुनाता हूं मैं
ये आईना मुझे मेरी तस्वीर दिखाता है
और इसी से दूसरों की परछाई बनाता हूँ मैं।

पढता हूँ खुद को तो जाग जाता हूँ मैं
नया लिखने को मन बनाता हूँ मैं
तालियों, तारिफों की आदत नहीं मुझको
पर कोई प्यार से कहे तो दिल खोल सुनाता हूँ मैं।

तारीफ गज़ल में मैं खुद की करता हूँ
कविता में कठिनाइयों के रंग भरता हूँ
मेरी मुक्तक उगते सूरज की तरह है
बैठ रवि किरण पर मैं संसार का भ्रमण करता हूँ।

हिंदी का प्रश्न स्वराज का प्रश्न है।

– महात्मा गाँधी

शत तन्त्री वीणा : तत वाद्य वीणा का एक स्वरूप

मुकुल दीक्षित
वरि. खण्डीय लेखाधिकारी

संगीत हमारे मन मस्तिष्क में उठने वाली भावनाओं को व्यक्त करने का पवित्र साधन है एवं संगीत को ब्रह्माण्ड की आत्मा का स्वरूप कहा गया है। संगीत की उत्पत्ति मानव जन्म के साथ ही हो जाती है परन्तु मानव के विकृत विचार इस उत्पत्ति को प्याज के छिलकों की भांति ढक लेते हैं एवं उसका आत्मिक स्वरूप प्रकट नहीं होने देते हैं।

संगीत विशुद्ध ब्रह्म विद्या है जिसके उद्भव और विकास में ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि की देवीय शक्तियां काम करती हैं इसलिए संगीत कला के आदि प्रेरक शिव, ब्रह्मा, सरस्वती, गन्धर्व, किन्नर आदि माने गये हैं।

अतुल्य भारतवर्ष का एक गौरवपूर्ण सांस्कृतिक संगीत कला का अविस्मरणीय इतिहास रहा है। भारत के मनीषियों, ऋषि मुनियों और संतों ने वर्षों की तपस्या और साधना से शोध कर निष्कर्ष निकाला और कहा, भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति और अवतरण में पूर्णतः नाद ब्रह्म का चमत्कार है।

यूनानी भाषा में संगीत के लिए म्यूजिक शब्द का प्रयोग किया जाता है एवं यूनानी परम्परा में म्यूज का शाब्दिक अर्थ है गान की प्रेरिका देवी। पण्डित शारंग देव ने प्राचीन ग्रन्थ संगीत रत्नाकर में लिखा है ''गीतं वाद्यं तथा नृत्य त्रयं संगीत मुच्यते'' अर्थात् गीत, वाद्य और नृत्य का पूर्ण रूप से विवेचन संगीत कहलाता है।

जो यन्त्र स्वरों की उत्पत्ति करते हैं वे वाद्य यंत्र कहलाते हैं अतः हमारा गला भी एक वाद्य यंत्र है एवं हमारे प्राचीन ऋषियों मुनियों द्वारा गात्र वीणा नाम दिया गया है।

वाद्य यन्त्र चार प्रकार के होते हैं : **तत् वाद्य** यानि **तन्त्री वाद्य** जैसे सितार, वीणा आदि, **सुषिर वाद्य** जैसे मुंह की फूंक या हवा से बजने वाले जैसे बांसुरी, शहनाई आदि, **ताल वाद्य** जैसे तबला, मृदंग आदि एवं **धन वाद्य** जैसे मंजिरे, चिमटे आदि।

जब तत् वाद्य की बात आती है तो वीणा का नाम सर्वोपरी आता है। हमारे भारत के मुख्यतः सभी घरों में, मंदिरों एवं सांस्कृतिक समारोह में माँ सरस्वती की आभायुक्त मूर्ति अथवा चित्र अवश्य ही नजर आते हैं।

वीणा की उत्पत्ति का इतिहास एक तन्त्री वीणा से प्रारम्भ होता है। ''एक तन्त्री स्वमेवास्ति सरस्वतीति'' इस

श्लोक के माध्यम से वीणा को सरस्वती का अवतार कहा गया है। वीणा का वर्णन सामवेद, ऋगवेद और उपनिषद में वर्णित है।

ब्रहदारण्यकोपनिषद में निम्न श्लोक है :

''स यथा वीणायै वाद्ययमानायै न ब्रह्यान् शब्दान शक्नुयात ग्रहणाय वीणायै तु ग्रहणेन वीणा वादस्यै वा शब्दो गृहीतः''

उक्त श्लोक वीणा का सम्बन्ध आत्मिक तत्व से करता है।

माँ सरस्वती की सदियों पुरानी वीणा हाथ में लिये अनेकों मूर्तियाँ भारत, इण्डोनेशिया एवं बांग्लादेश सहित अनेकों देशों की पुरातत्व की खुदाई में निकली हैं। उदम्यगिरी की गुफाओं में उकेरी गई केव पेंटिंग्स में नृप की सभा में वीणा बजाते हुए कलाकार नजर आते हैं।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के मनीषियों द्वारा रचित विभिन्न संगीत ग्रन्थों में अनेक प्रकार की वीणाओं के वर्णन मिलते हैं जैसे एक तन्त्री वीणा, रूद्र वीणा, पिनाकी वीणा, अलापिनी वीणा, त्रितन्त्री वीणा, शततन्त्री वीणा आदि। यद्यपि प्राचीन संगीत ग्रन्थों में अनेक प्रकार की वीणाएं प्रचलित होने का प्रमाण उपलब्ध है जिसके आधार पर विभिन्न वीणाओं के आकार, स्वरूप एवं वादन विधि का अनुमान लगाया जा सकता है परन्तु उनके क्रमबद्ध विकास की प्रक्रिया में दस्तावेज की कड़ी की अनुपलब्धता के कारण शोध का विषय है।

ऐसा कहा जाता है कि रूद्र वीणा की खोज स्वयं भगवान शिव ने की एवं सरस्वती वीणा की खोज का श्रेय माँ सरस्वती को जाता है।

इस लेख में जिस वीणा का वर्णन किया जा रहा है वह है शततन्त्री वीणा। शत का अर्थ है सौ तारों वाली वीणा। शत तन्त्री वीणा एक ऐसा तत वाद्य है जिसकी खोज की क्रमबद्ध विकास की जानकारी उपलब्ध नहीं है, जिसकी उत्पत्ति किस तरह हुई यह एक शोध का विषय है।

पाश्चात्य सोच के अनुसार इसकी खोज 1800 वर्ष पूर्व परशिया में हुई परन्तु वीणा का वर्णन वेदों में मिलता है। अतः यह अतिश्योक्ति नहीं होगी कि भारत ऋषियों, मुनियों की साधना स्वरूप शत तन्त्री वीणा का वर्तमान स्वरूप आया है।

शत तन्त्री वीणा या संतूर सामलम्ब चतुर्भुज आकार का लकड़ी का बना हुआ बक्सानुमा वाद्य यंत्र होता है। उक्त बक्से या पेटी की ऊँचाई 8 से 10 इंच, लम्बाई 2 से 2.5 फीट एवं चौडाई 1.5 से 2.2 फीट होती है। पेटी के बाएं तरफ से दाईं तरफ एक, दाईं से बाईं तरफ मेरू के उपर से गुजरते हुए तार होते हैं, तारों की संख्या लगभग

सौ होती है। एक मेरू पर तीन या चार तार होते हैं। उपरोक्त वर्णित तारों पर लकड़ी की कलमों के स्पर्श से स्वर लहरी उत्पन्न होती है जो स्वर उत्पन्न होते हैं वे सौम्यता से भरपूर होते हैं एवं उनकी लहरियाँ सुकून देने वाली होती हैं। वादक संतूर को अर्द्ध पद्मासन योग मुद्रा में अपने घुटनों पर रख कर बजाते हैं। उक्त सूफीयाना तत वाद्य का प्रयोग जम्मू कश्मीर के मंदिरों में होता था। कश्मीर के लोक गीत एवं सुफीयाना मौसिकी तक प्राचीन समय में यह प्रचलित था। शत तन्त्री वीणा या संतूर को भारतीय शास्त्रीय संगीत में केन्द्र बिन्दु में लाने का श्रेय पदम् विभूषण एवं संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध शत तन्त्री वीणा वादक पण्डित शिवकुमार शर्मा को जाता है एवं उनकी प्रशंसा के लिए किसी भी लेखक अथवा वक्ता के लिए शब्दों का अभाव ही रहेगा।

वाद्य यंत्र संतूर से उत्पन्न स्वर लहरियों की एक सार्वभौमिक भाषा है जो सुनने वाले को सुकून और शान्ति प्रदान करती है। भारत के ऋषि मुनियों की देन वाद्य यंत्रों से उत्पन्न संगीत सुनने से नींद बढिया आती है इससे मन और शरीर दोनों स्वस्थ रहते हैं एवं सकारात्मक विचार आते हैं, इसके अतिरिक्त हमारी विभिन्न शारीरिक व्याधियां भी ठीक होती हैं ।

विष्णु भगवान ने नारद जी से पुराण में कहा है :–

''नाअहम् वासामि वैकुण्ठे

योगीनाम् हृदये न च मदभक्ता

यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद''

आराधना

भारत भूषण शर्मा
आमंत्रित रचनाकार

इस दुनिया में ईश्वर और मनुष्य को आपस में जोड़ने वाली एक ही डोर है और वो है भक्ति की डोर। इस संसार में सभी मनुष्य अपने मतानुसार ईश्वर की भक्ति व उपासना करते हैं। जब हम ईश्वर को याद करते हैं या उनकी पूजा करते हैं तब हम सिर्फ अपने दुखों की व्याख्या करने का काम करते हैं। इसलिए शायद आज समाज में चारों तरफ दुख व परेशानी का माहौल है। हम ईश्वर को तो मानते हैं लेकिन फिर भी हमारे ज्ञान का दीपक अंधकार में डूबा हुआ है। आज हर मनुष्य ईश्वर के प्रति अपनी भक्ति की व्याख्या करता है लेकिन वास्तव में वो अपनी मूढता का प्रदर्शन करता है। भगवान शिव ने इस संसार को बचाने के लिए स्वयं विष पीया था लकिन क्या हम किसी इंसान के दुखों को अपने कंधों पर लेने की क्षमता रखते हैं? भगवान राम ने प्रेम के वशीभूत हो शबरी के झूठे बेर भी स्वादिष्ट भोजन की तरह खाये थे लेकिन हमें तो किसी गरीब के घर का पानी पीने में भी झिझक होती है। भगवान श्रीकृष्ण ने बिना किसी भेदभाव के अपने दरिद्र मित्र को गले से लगाया था लेकिन हमें तो किसी गरीब से नजरें मिलाने में भी संकोच होता है। भगवान बुद्ध ने हमें सत्य और अहिंसा का पाठ पढाया लेकिन ये दोनों ही तत्व आज हमारे जीवन की विचारधारा से दूर होते जा रहे हैं। प्रभु यीशु ने हमें प्रेम और विश्वास का अमृत दान दिया लेकिन क्या हम अपने माता-पिता से भी सच्चा प्रेम कर पाए? पैगंबर मौहम्मद साहब ने धरती पर अमन का साम्राज्य स्थापित किया लेकिन क्या हम दूसरों के लिए अमन और सलामती की दुआ करते हैं? ये सब सवाल हमारी आस्था और भक्ति पर कटाक्ष करते हैं। ये सब प्रश्न हमें तकलीफ देते हैं क्योंकि सच की तलवार से हमेशा मनुष्य जाति नजरें चुराती रही है। वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए तो यह कहने में भी संकोच होता है कि मनुष्य ईश्वर की सबसे सुंदर कल्पना है क्योंकि कल्पना और हकीकत में बहुत ज्यादा अंतर होता है। ईश्वर ने अपनी कल्पना को संवारने का कार्य इंसानों पर छोड़ा था लेकिन वास्तव में इंसान इस कार्य में विफल होता दिखाई देता है। इंसान को यह जीवन बड़ी मुश्किलों के बाद नसीब होता है लेकिन इंसान इस जीवन को अपने अभिमान में नष्ट कर देता है। वर्तमान समय में इंसान सिर्फ अपने लिये ही ये जीवन जीता है उसे दूसरे इंसानों के दुख और भावनाओं से कोई सरोकार नहीं है। एक तरफ तो हम ईश्वर की आराधना करते हैं तो दूसरी तरफ उसके ही बनाये हुए इंसानों से नफरत करते हैं। ऐसा करने पर हम अपनी आराधना और आस्था के साथ बहुत बड़ा विश्वासघात करते हैं। ईश्वर और मनुष्य का सम्बन्ध सिर्फ आराधना तक सीमित नहीं है बल्कि इस संबंध का लक्ष्य तो मानवता को सत्य का बोध कराना है। इसलिए मनुष्य को ईश्वर की आराधना करने से बढकर ईश्वर के रचे इस संसार के महत्व को समझना होगा क्योंकि इसके बिना ईश्वर तो क्या हम स्वयं भी अपनी सहायता नहीं कर सकते हैं। हमें ईश्वर की आराधना करने से पहले ईश्वर को समझना जरूरी है। एक इंसान द्वारा दूसरे इंसान की भावनाओं का सम्मान करना तथा उसके साथ समानता का व्यवहार करना ही ईश्वर की सच्ची आराधना है।

कृष्ण भक्त कुम्हार

सरला भगत
आमंत्रित रचनाकार
संकलन

गोकुल में चारों ओर नटवर नागर नन्द किशोर की ही चर्चाएं थीं। ग्वाले-गोपियां सदैव नन्दलाला को घेरे रहतीं। सभी गोकुलवासी कान्हा के दरस को लालायित रहते थे। उनकी लीलाओं के चर्चे दूर-2 तक लोगों की जुबां पर थे। इधर यशोदा मैया का मोह भी कान्हा में बढता जा रहा था। हर समय वे उसे अपनी आखों के सामने रखती थीं पर कान्हा थे कि येन केन प्रकारेण मैया को चकमा दे गोपियों का माखन खाने और शरारत करने पहुंच जाते। एक दिन यशोदा मैया श्री कृष्ण पर लगाये उलाहनों से तंग आकर छड़ी लेकर कान्हा के पीछे दौड़ पड़ीं। माता को क्रोध में देखकर कान्हा बचाव के लिए दौड़ पड़े। दौड़ते-2 एक कुम्हार के पास आए। कुम्हार तो अपने मिटटी के घड़े बनाने में व्यस्त था। कृष्ण ने आते ही कुम्हार से कहा भैया मुझे कहीं छिपा दो, मैया छड़ी लेकर मेरे पीछे मारने आ रही हैं। कुम्हार जानता था कि ये तो साक्षात भगवान आए हैं उसने एक बड़े से घड़े के नीचे श्रीकृष्ण को छुपा दिया।

कुछ देर पश्चात् मैया यशोदा कृष्ण को ढूढ़ती हुई वहां आ गई और कुम्हार से पूछा क्यूं रे कुम्हार। तूने मेरे लल्ला कन्हैया को कहीं देखा है क्या। कुम्हार ने कह दिया नहीं मैया, मैंने तो नहीं देखा। श्री कृष्ण यह वार्तालाप सुन रहे थे। मैया के चले जाने पर कुम्हार से कहा भैया जी, यदि मेरी मैया चली गई हों तो मुझे इस घड़े से बाहर निकालो। कुम्हार बड़ा समझदार था उसने भी मौके का फायदा उठाते हुए कहा, ऐसे नहीं, प्रभु पहले मुझे चौरासी लाख योनियों के बन्धन से मुक्त करने का वचन दो। भगवान कृष्ण मुस्कराये और कहा वचन दिया। कुम्हार ने कहा, मुझे अकेले नहीं मेरे सम्पूर्ण परिवार को भी चौरासी लाख योनियों से बन्धन मुक्त करने का वचन देना होगा।

भगवान कृष्ण बोले वचन दिया, अब तो मुझे निकालो। कुम्हार बोला, बस भगवन एक विनती और है वो ये कि जिस घड़े के नीचे आप हैं वह मिटटी मेरे बैलों के ऊपर लाद के लाई गई है सो आप मेरे बैलों को भी बन्धन मुक्त करने का वचन दो। श्री कृष्ण ने मुस्कराते हुए कहा, वचन दिया अब तो तुम्हारी सभी इच्छाएं पूरी हो गईं। अब तो मुझे बाहर निकालो।

कुम्हार कुछ झिझकते हुए हाथ जोड़कर बोला, नहीं भगवान एक अन्तिम इच्छा यह है कि जो पशु-पक्षी, कीट-पतंगे, जीव-जन्तु या मनुष्य आपका और मेरा यह संवाद, सुन रहे हैं उन्हें भी बन्धन मुक्ति का वचन दें तभी मैं आपको बाहर निकालूंगा। श्री कृष्ण कुम्हार के असीम प्रेम को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और सभी के बन्धनों को

मुक्त करने का वचन दिया। कुम्हार ने श्री कृष्ण को घड़े से बाहर निकाला और अपने कान पकड़ते हुए श्री कृष्ण को साष्टांग प्रणाम किया।

जरा सोचिए जो बाल-गोपाल सात कोस लम्बे-चौड़े गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी सी ऊंगली पर उठा सकते हैं क्या वो एक मिटटी का घड़ा नहीं उठा सकते थे। कहते हैं बिना प्रेम मिले नहीं नटवर नागर नन्दकिशोर। कितने भी व्रत, उपवास, यज्ञ अनुष्ठान या भक्ति कर लें पर सच्ची भक्ति तो इन्सान की सभी से प्रेम भाव की है और बिना प्रेम भाव के कृष्ण किसी को भी नहीं मिलते।

आरज़ू

नेहा शर्मा
आमंत्रित रचनाकार

कतरे के बादल इक दरिया लौटाना चाहते हैं
आज खुद को इस कदर तुम पर लुटाना चाहते हैं
हो सामने नज़रों के फिर भी, हैं बेपनाह ये दूरियाँ
हो पंख और उड़ सके जो, हम उन परिन्दों की तरह
तो हर कैद से होकर रिहा अब, उस पार जाना चाहते हैं
आज खुद को इस कदर तुम पर लुटाना चाहते हैं
ना अदावतें, ना रंजिशें, कोई तक्कलुफ भी नहीं
फिर कोशिशों के बाद भी, क्यों नींद आँखों में नहीं
अब चूम कर माथा तुम्हारा, हर थकन मिटाना चाहते हैं
अब इस कदर तुम से जुड़ना चाहते हैं।

बहु या बेटी

लवली शर्मा
आमंत्रित रचनाकार

विदाई के समय प्रिया को गले लगाते हुए माँ ने कहा– आज से तेरे सास ससुर ही तेरे माँ बाप हैं। तभी सरिता जी बोलती हैं 'चिंता न करो समधन जी बहु नहीं बेटी ले जा रहे हैं।' प्रिया का ससुराल में पहला दिन था। वह सुबह जल्दी उठकर नहा–धोकर तैयार हो गई। बहु को देखने के लिये अभी रिश्तेदारों का आना जाना चल ही रहा था कि प्रिया की सास सरिता जी कमरे में आती है और कहती है। अरे! यह क्या बहु तुम तो ऐसे ही बैठी हो बिना घूंघट के, नई–नई शादी हुई है, सबको ऐसे ही मुँह दिखाती फिरोगी क्या? चलो घूंघट कर लो। प्रिया ने सोचा शायद अभी रिश्तेदारों का आना–जाना है इसलिए ऐसा कह रही है। प्रिया ने उनकी बातों को दिल से नहीं लगाया और लंबा घूंघट करके बैठ गई। प्रिया को पहले ही दिन अपनी सास सरिता जी से ऐसे व्यवहार की उम्मीद न थी। शादी के पहले फोन पर जब भी बात होती थी तो हमेशा यही कहतीं थी कि रिया की तरह तुम भी हमारी बेटी हो, बेटी की तरह रखेंगे, फिर ये क्या? मेहमानों के जाने के बाद भी सरिता जी हमेशा प्रिया को ससुर जी के सामने घूंघट रखने के लिये टोकती रहतीं।

एक दिन सरिता जी और प्रिया साथ में खाना खा रही थीं, प्रिया को रोटी चाहिये थी, घर पर कोई नहीं था तो प्रिया ने सोचा खुद ही रोटी उठा ले। प्रिया ने जैसे ही हाथ बढ़ाया सरिता जी जोर से चिल्लाई 'अरे सारी रोटियों को जूठा करोगी क्या? बहुओं का जूठा हुआ ससुर जी नहीं खाते, तुम्हें नहीं पता क्या?' सरिता जी के आवाज में इतना तीखापन था कि बिचारी प्रिया की भूख ही मर गई। सरिता जी हमेशा किसी न किसी बात पर प्रिया को टोकती रहतीं थी। बहु ये मत करो, बहु वो मत करो। प्रिया हमेशा सोचती कि अब मैं और नहीं सुन सकती लेकिन परिवार में शांति बनाये रखने के लिये वो कभी भी सरिता जी को पलट कर जवाब नहीं देती। हमेशा हँसमुख और चंचल रहने वाली प्रिया गुमसुम रहने लगी। ससुराल में उसे घुटन सी होने लगी। प्रिया के मायके से जब भी कोई आता, सरिता जी यही बोलतीं कि प्रिया तो हमारी बेटी है और हम उसके माँ–बाप, बिल्कुल बेटी की तरह रखते हैं इसे। एक दिन प्रिया और उसकी ननद रिया किसी बात को लेकर जोर–जोर से हँस रहीं थी तभी सरिता जी गुस्से में कहती है, बहुएं इतनी जोर से हंसती है क्या? पड़ौसी भी सोच रहे होंगे इनकी बहू तो जोर–जोर से हंसती है, जोर–जोर से बोलती है। तुम्हारे माँ–बाप ने कोई संस्कार नहीं सिखाए क्या?

माँ–बाप के संस्कार पर सवाल उठाने पर प्रिया से रहा न गया वह बोल उठी, मांजी आज आप मुझे बता दीजिए कि मुझे यहाँ बेटी की तरह रहना है या बहु की तरह। एक तरफ तो आप सबसे यही बोलती हैं कि प्रिया

को हम बेटी की तरह रखते हैं तो क्या बेटियां हमेशा घर में घूंघट में रहती हैं? बेटियों का छुआ भोजन कोई पिता नहीं खाता क्या? सिर्फ कह देने से बहु बेटी नहीं बन जाती, अपने व्यवहार और सोच में भी उसे बेटी की तरह ही प्यार और स्वतन्त्रता देनी पड़ती है। सरिता जी के पास प्रिया के सवालों का कोई जवाब नहीं था। वो चुपचाप अपने कमरे में चली गई। इस कहानी के माध्यम से मैं यही बताना चाहती हूँ कि हमारे समाज में लड़की के ससुराल वाले अक्सर यही बोल कर विदा कराते हैं कि हम बहु नहीं बेटी ले जा रहे हैं। हम इसे बेटी की तरह रखेंगे। लेकिन हकीकत में कदम-कदम पर उन्हें ये अहसास दिलाया जाता है कि तुम बेटी नहीं बहु हो और बहुओं से ही ये अपेक्षा की जाती है कि वह सास-ससुर को अपने माता-पिता की तरह समझे और उन्हें प्यार और सम्मान दे। एक लड़की जो अपने माता-पिता, भाई-बहिन सबको छोड़कर आयी है वह तब भी ससुराल के लोगों को अपना परिवार मान लेती है लेकिन ससुराल के लोग उसे परिवार के सदस्य की तरह नहीं मानते। बहु चाहे 18 साल की हो या 35 साल की ससुराल के सभी सदस्य उससे ढेर सारी उम्मीदें रखने लगते हैं। घर में बहु के आने से पहले सब अपना काम जहां खुद करते थे वहीं बहु के घर में आते ही सुबह की चाय से लेकर रात का खाना हाथ में देने तक की उम्मीद उससे की जाती है। उसे एक इंसान नहीं बल्कि चलता-फिरता रोबोट मान लेते हैं, तब हम यह भूल जाते हैं कि वह भी हमारी तरह एक इंसान है। गर्मी, सर्दी सब उसे भी लगती है, कभी तबियत उसकी भी खराब हो सकती है।

अब एक सोच में बदलाव की जरूरत है। घर में पुरुष से ज्यादा औरतों की सोच बदलना बहुत आवश्यक है। ये बात कड़वी है परन्तु सच है कि 'औरत ही औरत की सबसे बड़ी दुश्मन होती है'। जिस दिन घर-घर की औरतें आपस में मिलकर रहना सीख जायेंगी तो सास-बहु के विचार भी मिल जायेंगे। उस दिन लड़ाई-झगड़े अपने आप ही खत्म हो जायेंगे। क्योंकि तब वास्तव में बहु को बेटी केवल कहा ही नहीं जाएगा बल्कि बेटी माना जाएगा और सच यह है कि माँ बेटी में तो परायापन होता नहीं है।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना
देश की उन्नति के लिये आवश्यक है।

— महात्मा गाँधी

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह (दिनांक 28.09.2021) के अवसर पर हिन्दी स्व-रचित काव्य पाठ प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए महालेखाकार (लेखा एवं हक.) श्रीमती अतूर्वा सिन्हा

सरकारी कामकाज मूल रूप से हिन्दी में करने पर मूल शब्द लेखन प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत प्रथम व द्वितीय पुरस्कार हेतु चयनित कार्मिकों को पुरस्कृत करते हुए महालेखाकार (लेखा एवं हक.) श्रीमती अतूर्वा सिन्हा

हिन्दी दिवस समारोह (14 सितम्बर, 2021) के शुभारम्भ के अवसर पर मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए कार्यालय प्रमुख

हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर 'राजभाषा प्रतिज्ञा' लेते हुए कार्यालय प्रमुख, उच्चाधिकारीगण एवं कार्मिक

महालेखाकार कार्यालय परिसर में स्थित चारों कार्यालयों के दर्शकगण हिन्दी समारोह (सितम्बर, 2021) का आनन्द लेते हुए

विभागीय हिन्दी तिमाही बैठक (जुलाई, 2021) की झलकियाँ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर की 81वीं अर्द्धवार्षिक बैठक (26.08.2021) की झलकियाँ

राम-नवमी

बनवारी लाल सोनी
आमंत्रित रचनाकार

ये राम-नाम अति मोहक है
कण-कण में प्रभु की छवि प्यारी
उनकी सुंदरता को लिखकर
ये नयन-दृष्टि कब हारी।

नर का चोला धारण करके
सन्मार्ग दिखाने आए थे
मर्यादा की सीमा में बंध
वे 'पुरुषोत्तम' कहलाये थे।

उनकी नजरों में सब समान
चाहे महीय या अधम नार
सामिष भोगी उस पक्षी से भी
रामचंद्र को बहुत प्यार।

लंका में युद्ध हुआ भारी
तब अपनी शक्ति दिखाई थी
शंकर जी की सेवा के हित
प्रभु ने अपनी भक्ति दिखाई थी।

अभिमान तनिक भी छू न सका
नम्रता सदा अपनाई थी
संकट में धीरज अपनाया
अधरों पर मुस्कान समाई थी।

ना खुशी राज्य की, वैभव की
वन में भी था संताप कहाँ
समरसता जीवन में आती
रघुकुल-भूषण रघुनाथ जहाँ।

देखो कितना है कठिन कार्य
सागर पर सेतु बंधाया था
बाली ने जिसको ठुकराया
वह भाई गले लगाया था।

वनवासी-भीलों से रघुवर
स्नेह बड़ा ही रखते थे
उनके सुख-दुख में भागीदारी
तारीफों से कब थकते थे।

श्री रामचंद्र की अमर कथा
घर-घर में गाई जाती है
श्रद्धा से लोग श्रवण करते
रस-घोल सुनाई जाती है
चैत्रमास की नवमी तिथि
अयोध्या प्रगटे रघुकुल नंदन
सब देव मनुज का रूप धर
कर रहे रामजी का वंदन।
अभिजीत हरिप्रीता नक्षत्तर
था मध्य दिवस मंगलकारी
गा रहे बधाई घर-घर ही
अति ही प्रमुदित थे नर-नारी।
राजा दशरथ के महलों में
आनंद रूप साकार हुआ
वह पार ब्रह्म बंध बंधन में
मां कौशल्या का प्यार हुआ।
सूरज अपनी गति को भूले
उनके मन में अति का उछाह हुआ
स्तब्ध हुए रथ के घोड़े
दिन बढ़े, हो गया एक माह।
अप्सरा नृत्य कर रहीं वहाँ
चारण विरिदावलि गाते थे
याचकगण राजा दशरथ से
मन चाही चीजें पाते थे।
सोना-चांदी, हीरे-मोती
भर-भर कर थाल लुटाए थे
सुंदरियों ने सप्तम स्वर में
हरि-लीला के पद गाए थे।
गलियों में थी इत्र की कीच
महलों में धूम्र महकता था
बूढ़े-बालक और युवा वर्ग
हर कोई आज चहकता था।
इतना भारी था जन समूह
लगता लहरें हों सागर की
सबमें ही मानो होड़ मची
छवि लिखने को रस-गागर की।
शंकर आए, भुशुण्डि आए
दोनों नर-रूप बनाए थे
श्री रामचंद्र का रूप देख
काम देव भी शरमाए थे।
बस तब से 'चैत्र-मास-नवमी'
त्यौहार बन गया घर-घर का
उत्साह-बांध छलका करता
हर नारी का और हर नर का।

बालक भी पीछे कहाँ रहे
उनके मन में उमंग भारी
मंदिर-मंदिर झांकी सजती
जो लगती हैं अति ही प्यारी।
ये मानव-जीवन दुर्लभ है
या कहें कि है पुण्यों का फल
बस चार दिनों का मेला है
बस चार दिनों की है हलचल।
जब तक जीना, तब तक पसीना
फुरसत न कभी मिल पाती है
पर बिना भजन मन की कलिका
विकसित न कभी हो पाती है।
हम करें भजन तो मिटे तपन मन की
जीवन जीएं अच्छाई का
सत्कर्म करें, सन्माग्र चलें
पथ छोड़ें झूठ-बुराई का।
हे दयासिंधु-आनंद-मगन
हो द्रवित, खिलाओ मन क्यारी
अज्ञान-अंधेरे में भटका है
जीवन भर ही 'बनवारी'।

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।

– महात्मा गाँधी

गीत

रामानन्द
आमंत्रित रचनाकार

गीत को तुम दो, नव–प्रेम का परिधान
गति पकड़े तीव्र गति से ऐसा दो वरदान
सृजित करें सभी कवि–जन अपनी रचना
कर दो प्रबन्ध तुम ऐसा यज्ञ–अनुष्ठान।

प्रेम–पथ का हो प्रशस्त हर पथ
करे हम अपनी सभी मुश्किल आसान
झंकृत हर तार वीणा का हो
गूँजे सकल जहान।

गीत उतरें हंसों की तरह गगन से
स्वच्छ कर दो सारा जहां
अधरों पर उतर आयें नव–गीत
होठों पर फैले मुस्कान।

मधुर स्वर गूँजे सकल सृष्टि में
नव–सृजन, नव–गीत का हो निर्माण
शंख की गूँजे ध्वनि, गूँजे सितार भी
नव–गीत की सृष्टि हो, मेरे भगवान।

हर दिशा, हर दशाा में
सम्बल बने गीत मेरे
युगों तक चलती चले
अपनी 'मरुलेखा वातायन'।

कैसी दुनिया है ये

सोहित शर्मा
आमंत्रित रचनाकार

कैसी दुनिया है ये
कोई आ रहा है तो कोई जा रहा है
अपना-पराया और
पराया-अपना होता जा रहा है।
दिल बहुत रोना चाहता है
पर कम्बख़्त ये पानी सूखता जा रहा है
याद बहुत आती है बीते लम्हों की
पर ये समय रुक कहाँ रहा है।
समय कैसा आ गया है आज
कि अपना अपनों के हाथ तक नहीं लगा पा रहा है
कलयुग के इस दौर में
पाल-पोस के बाप ने अपने बेटों को बड़ा किया
पर भगवान की लीला देखो
वही हाथ आज अपने बेटे की चिता जला रहा है।
बदन पर कपड़े चाहे फट रहे हों लेकिन इंसान
मुँह पर साबुत मास्क लगाता जा रहा है
दिल में मैल बहुत है पर इन्सान
हाथों का मैल साफ करता जा रहा है।

क्या मुँह लेके जाऊँ, उस ऊपर वाले के पास
हमें भेजा था अच्छे काम करने के लिए
लेकिन हालात ऐसे हैं कि न चाहते हुए भी
अप्रत्याशित ऊपर जाना पड़ रहा है।

मेरा बचपन

प्रीति शर्मा
आमंत्रित रचनाकार

वह बचपन भी कितना सुहाना था
जिसका रोज एक फसाना था
कभी पापा के कन्धों का
तो कभी माँ के आँचल का सहारा था।
कभी चिकनी मिट्टी के खेल
तो कभी दोस्तों के साथ मस्ताना था
कभी नंगे पाँव दौड़ का
तो कभी पतंग न पकड़ने का पछतावा था।
कभी बिन आँसू रोने का
तो कभी बात मनवाने का बहाना था
बचपन के वो दिन भी कितने हसीन थे
ना कुछ छुपाना था, दिल में जो भी है सब बताना था।
वह बचपन भी कितना सुहाना था।

कड़वा सच

हर्षित मोहन
आमंत्रित रचनाकार

हमेशा की तरह आज भी कुछ लिखने से पहले मेरे ज़ेहन में मेरे चारों ओर बिखरे हुए कई एक ऐसे चेहरे सामने आ आकर खड़े हो रहे हैं जैसे मानों वे मेरे द्वारा इस समाज से कुछ कहना चाहते हों और जहाँ तक अपनी बात है मैं कहानियों में अपने आस पास बिखरे हुए उन पात्रों के जीवन संघर्ष को ही ले पाता हूँ जिनको मैंने थोड़ा नजदीक से जाना या समझा हो क्योंकि व्यक्ति के जीवन संघर्ष या उसके दुःख को गहरी चिन्ता के रूप में प्रस्तुत करने में ही अपनी कहानी की सार्थकता समझता हूँ क्योंकि मैं वही लिखता हूँ जो मेरे अनुभव या अनुभूति की सीमा में आ जाये पर शायद सच यह भी है कि अँधेरे जीवन में रहने वाले हम लोग अनुभव तो सब कुछ करते हैं पर उसे शब्दों में कहना बड़ा कठिन होता है। वास्तव में ज़िन्दगी की जो सच्चाई है उसे हम जब कभी असली रूप में देखते हैं तो उसकी भयानकता पर मेरे रोंगेटे खड़े हो जाते हैं।

ऐसी ही एक सच्चाई से मेरा हाल ही में साक्षात्कार हुआ जिसने एक ओर तो मेरे सामने से बाकी चेहरों को हटा दिया और अपने बारे में लिखने को मजबूर कर दिया और दूसरी और मुझे अहसास कराया इस बात का कि जिन्दगी और जिन्दगी जीने वालों की बेशुमार परतें ऐसी भी होती हैं जिन्हें केवल आँखों से ही नहीं देखा जा सकता क्योंकि जो सतह के ऊपर दिखता है सच वही नहीं होता बल्कि सच को जानने के लिए कहीं न कहीं इन्सान के अन्दर में झाँक कर देखना होता है। यही सोचकर मैंने नीरज के चेहरे पर नजर आ रही उस लापरवाही और रुखेपन को नजरअन्दाज किया जो कि सारे जमाने के प्रति नज़र आ रही थी।

नीरज से मेरी मुलाकात मेरे ही घर पर हुई थी। उसे उसकी दादी हमारे पास काम के लिए छोड़ कर गईं थी। वह चाहती थीं कि नीरज हमारे यहाँ सुबह से शाम तक काम करके शाम को वापस अपने घर आ जाये। खैर यह तो रही उसकी दादी की बात। पर जब मैंने उस 18 साल के लड़के से पहला सवाल उसकी पढ़ाई का किया और पूछा कि वह पढ़ता है तो इस पर उसका जवाब था नहीं, 4 कक्षा तक पढ़कर छोड़ दिया फिर मेरे द्वारा यह पूछने पर कि आगे पढ़ोगे? हम तुम्हें सुबह वाले स्कूल में दाखिला दिलवा देंगे, हम तुम्हें पढ़वायेंगे, तो इस पर उसने जो अप्रत्याशित जवाब दिया वह मुझे सकते में डालने के लिए काफी था। मगर उसके चहरे पर तो मानो कभी न खत्म होने वाली तटस्थता ने अपना एकाधिकार कर रखा हो इसलिए उसी तटस्थता के भाव में उसने जवाब दिया, नहीं मुझे अब अपनी पढ़ाई या स्कूल से कोई सरोकार नहीं है और न ही अब कभी होगा। मैं आपके यहाँ काम करने आया हूँ और वहीं करूंगा भी लेकिन एक बात और भी है वो ये कि मैं शाम को अपने घर वापस नहीं जाया

करूंगा। आप तो मेरी महिने के महिने तनख़्वाह घर पर भिजवा देना। अगर कभी आपको मुझे निकालना हो तो मुझे कुछ दिन पहले बता देना ताकि मैं दूसरा घर ढूँढ लूँ क्योंकि मैं अपने घर किसी भी हालत में जाना नहीं चाहता। इसके पहले कि मेरा सवाल होता क्यों? उसने मेरे क्यों पूछने का भी इन्तज़ार नहीं किया और अपनी बात को बिना किसी उतार चढ़ाव के कहता ही चला गया। उसने बताया कि अपने घर में घुसते ही मुझे चारों तरफ खून जैसा लाल-लाल रंग ही नज़र आता है, नहीं नहीं मैं अब वहाँ नहीं जाऊंगा। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे वह मुझसे नहीं बल्कि अपने आपसे ही कह रहा हो कि, न जाने क्यों मुझे मेरी माँ का चेहरा अक्सर खून में लथपथ ही नज़र आता है। मेरी माँ पाँच बेटियों को एक के बाद एक जन्म देने के बाद मेरे पिता की बेटे की चाह को पूरा करने की चाह में मुझे जन्म देते ही अत्यधिक कमजोरी की वजह से भगवान को प्यारी हो गई। माँ तो चली गई मगर न जाने क्यों मेरे लिए वही लाल रंग छोड़ गई।

उसकी कहानी उसकी जुबानी सुनते सुनते कब मेरी आँखें भर आईं और मेरी आँखों से आँसू टपक कर मेरी ही गोद में आकर गिरे, मुझे पता ही नहीं चला मगर इतनी छोटी सी उमर में मन पर इतना बडा बोझ लिए हुए वह, लेकिन उसके चेहरे पर कोई शिकन तक नहीं, अपनी कहानी सुनाने के दौरान भी वह बिल्कुल भावशून्य स्थिति में था, बिल्कुल ऐसा अहसास हो रहा था जैसे कोई पत्थर हो जो बोल पड़ा हो।

परिस्थितियों ने उसे इस कदर पत्थर सा बना दिया था कि वह जीते जी हर प्रकार की भावना से, सुख-दुःख की अनुभूति से ऊपर उठ चुका था और उसकी आँखों ने हमेशा के लिए गंभीरता को ओढ़ लिया था। उसे देखकर ऐसा लगता था मानो पीड़ा व व्यथा के बोझ से उसका दिल इस कदर दबा हुआ था कि अब किसी नये ग़म का अहसास या पुराने हादसे को याद करने के दर्द से भी वह मानो कोसों दूर जा चुका था।

नीरज आज जिस मनोस्थिति में है उसका गुमान तक भी उसके पिता या दादी को नहीं है यह देखकर मुझे यहाँ पर 'तालस्ताय' की 'डेथ आफ इवान इलीच' और 'पिरांदेलो' के नाटक का सार याद आ गया जिसमें यह बताने की चेष्टा की गई थी कि 'हमारी सामान्य ज़िन्दगी के अश्लील और छोटे-छोटे दुर्ग बने हुए हैं, ऐसे दुर्ग जिसमें पनाह लेकर हम समझते हैं कि अपने आप और अपनी नियति से हम सुरक्षित हैं।' मगर क्या वास्तव में ऐसा है, कदापि नहीं। कयोंकि कभी हम अपने को भाग्य की आड़ लेकर सुरक्षित कर लेने का ढोंग करते हैं और कभी समय को दोष देते हैं। समय की बात पर मुझे अंग्रेजी की एक कविता याद आ रही है जिसका अर्थ कुछ इस प्रकार था : 'पहाड़ के नीचे से कितनी भी तेज गति से तुम भागो समय उससे भी तेज भागेगा। ज़िन्दगी की दौड़, समय की दौड़ से हमेशा पीछे रहेगी। वास्तव में समय स्वयं एक छलावा है क्योंकि समय मन की उत्पत्ति है। समय न ठहरता है और न भागता है, ठहरती और भागती है स्थितियाँ, मन की परतें।' वास्तव में अब तो अपनी मन की परतों को एक स्वच्छता प्रदान करने की आवश्यकता वर्तमान संदर्भों में बेहद जरूरी है कि नीरज जैसे न जाने कितने चरित्र अपने साये को एक पूरा आकार दिला पाने से पहले ही समेट लेने को मजबूर हो उठते हैं।

जहाँ तक नीरज का प्रश्न है उसमें बदलाव लाने की हरसंभव कोशिश तो मुझसे होगी ही लेकिन अपने घर-परिवार व समाज के प्रति व्याप्त उसके इस रोष को मैं किस हद तक कम कर पाऊंगा उसके बारे में अभी मैं कुछ विश्वास से नहीं कह सकता। यदि मैं विश्वास से नीरज के बारे में कुछ कह भी पाऊं तो भी आज प्रश्न केवल एक नीरज के भविष्य का नहीं है बल्कि नीरज जैसे न जाने कितने मासूम बच्चों का है जो ऐसी परिस्थितियों में अपनी सही दिशा पर चलना तो दूर अपनी सही दिशा को पहचान भी नहीं पाते और समय से पहले ही प्रौढ़ता को ओढ़ सा लेते हैं, एक कभी न ख़त्म होने वाली प्रौढ़ता।

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ
पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता

– आचार्य विनोबा भावे

***

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है,
वह उन्नत नहीं हो सकता।

– डॉ. राजेंद्र प्रसाद

सन्तुलित एवं पौष्टिक आहार

सुशील कुमार शर्मा
आमंत्रित रचनाकार

साधारणतया देखने में आता है कि किसी व्यक्ति को जब कोई चीज आसानी से मिलती है तो उसे उस चीज की महत्ता समझ में नहीं आती है। लेकिन जब वो ही चीज उससे दूर हो जाती है तो पता चलता है कि वो कितनी महत्वपूर्ण थी। अब वो चाहे कोई व्यक्ति हो या कोई खाने पीने की वस्तु हो। यह एक मानव स्वभाव है। मानव शरीर में भोजन का बहुत अधिक महत्व है। बिना भोजन के व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता है। अब भोजन कैसा हो यह भी एक महत्वपूर्ण विषय है। किसी व्यक्ति को मीठा अधिक पसन्द होता है तो किसी को नमकीन। जबकि मानव शरीर के लिए सभी का अपना महत्व होता है इसलिए व्यक्ति को चाहिए कि वह सन्तुलित आहार ले। कई लोगों की धारणा होती है कि चीनी और फैट शरीर के लिए नुकसानदायक होते हैं जबकि ऐसा नहीं है बल्कि उसकी अधिकता नुकसानदायक होती है। इस धारणा के चलते लोगों में नमकीन आहार की ओर आकर्षण बढता जा रहा है। नमकीन आहार भी शरीर के लिए जरूरी होता है लेकिन उसकी भी अधिकता नुकसानदायक होती है।

आज की युवा पीढी में मीठे के प्रति आकर्षण घटता जा रहा है और यही कारण है कि वह फास्ट फूड की ओर ज्यादा ध्यान देने लगा है। साथ ही आज का युवा परम्परागत आहार को छोड़कर फास्ट फूड की ओर रूख करने लग गया है। इसी कारण आज के युवा की कार्यक्षमता घटती जा रही है। घर की रसोई में बनी ताजा मिठाई खाने के बजाय बाहर के डब्बा पैक वस्तुओं की और आकर्षण बढता जा रहा है। उसको इस बात का ज्ञान ही नहीं है कि घर की रसोई में बना ताजा भोजन चाहे कितना भी साधारण हो उसके शरीर के लिए फायदेमंद ही होता है। आज की आपाधापी के युग में घर से दूर रहने वाले युवा घर में खाना बनाने के बजाय बाजार से फास्ट फूड मंगाकर खाना ज्यादा पसन्द करते हैं। परिणामस्वरूप अक्सर वे बीमारियों से घिर जाते हैं और जब उन बीमारियों के चलते डॉक्टर उनको फास्ट फूड बिल्कुल भी नहीं खाने की सलाह देते हैं तो वे बहुत पछताते हैं। तब वे सोचते हैं कि यदि हम फास्ट फूड सीमित मात्रा में खाते तो शायद आज भी खा रहे होते लेकिन अब पछताने के सिवाय कुछ भी नहीं हो सकता।

ऐसा ही मेरे एक दोस्त राकेश के साथ हुआ। राकेश अपने माता-पिता की इकलोती संतान था। शायद इसी लिए वह लाडला भी था। माता-पिता दोनों ही सरकारी नौकरी में थे। राकेश का स्कूल बारह बजे का था। राकेश की मां सुबह ही उसके लिए खाना बना कर रख जाती थी। वह राकेश के खाने का बहुत अधिक ध्यान रखती थी। राकेश को चटपटा खाना ज्यादा पसंद था। मीठा उसको कम ही पसंद था। मीठा वह कभी-कभी ही खाया करता

था। वह भी बहुत कम मात्रा में। कभी शादी पार्टी में जाता तो कोई स्पेशल मिठाई होती तो फिर भी खा लिया करता था। उसकी मां उसको काफी समझाती थी कि मीठा भी शरीर के लिए बहुत जरूरी है लेकिन वह बिल्कुल भी नहीं सुनता था। मां उसके लिए खाने में जब भी हलवा बना कर रख के जाती तो वह उसको हाथ भी नहीं लगाता था और डस्टबिन में डाल दिया करता था। कभी-कभी उसकी पसंद की कोई मिठाई होती तो एक पीस खा लिया करता।

कुछ समय ऐसा ही चलता रहा। राकेश पढाई में बहुत ही होशियार था। वह हमेशा अच्छे नम्बरों से पास होता था। इस बार 12वीं में उसके 98% नम्बर आये थे। सभी घरवाले बहुत ही खुश थे। उसका एक अच्छे कॉलेज में एडमिशन हो गया था। वह पहले से भी अधिक लगन से पढाई करने लग गया था। वह दिन भर एक जगह बैठकर लगातार पढाई करता रहता था। लेकिन खाने-पीने के मामले में ज्यादा ही लापरवाह होता जा रहा था। कुछ महिनों बाद उसको बहुत अधिक थकान होने लगी। उसका पढाई में भी मन नहीं लगता था। उसके हाथ-पैर भी कभी-कभी सुन्न हो जाते थे। एक बात और भी हुई कि उसे भूख भी बहुत लगने लग गई थी। भूख लगने पर वह पौष्टिक आहार के बदले फास्ट फूड ज्यादा लेने लग गया। जिससे उसकी तबियत बहुत ज्यादा खराब रहने लग गई। माता-पिता को बहुत चिन्ता हुई। वे दोनों एक दिन उसको डॉक्टर के पास लेकर गये। डॉक्टर ने चेकअप करने के बाद उसको कुछ टेस्ट कराने की सलाह दी।

दो दिन बाद टेस्ट की रिपोर्ट आयी। वे फिर उन रिपोर्ट्स को दिखाने डॉक्टर के पास गये। रिपोर्ट देखने के बाद डॉक्टर ने बताया कि इसको डायबिटिज हो गई है। डॉक्टर ने उसका मीठा बिल्कुल बन्द कर दिया। राकेश ने कहा कि मैं तो मीठा खाता ही नहीं तो मुझको डायबिटिज कैसे हो गई। तब डॉक्टर ने कहा कि मीठा खाना डायबिटिज की वजह नहीं है। सीमित मात्रा में मीठा शरीर के लिए बहुत जरूरी है। यह तो कई कारणों से हो सकती है। उन्होंने कुछ दवाईयां लिख के दी। सभी को बहुत अधिक चिन्ता होने लगी।

धीरे-धीरे समय बीतता गया। कुछ स्वास्थ्य में भी सुधार हुआ लेकिन जैसा कि मानव स्वभाव होता है कि जिस वस्तु के लिए मना किया जाये उसकी ही तरफ ज्यादा ध्यान जाता है। ऐसा ही कुछ राकेश के साथ हुआ। कुछ समय तक जब बिल्कुल भी मीठा नहीं खाया तो उसको मीठा खाने की इच्छा होने लगी। जो थोड़ी बहुत अपनी पसंद की मिठाइयां खाता था वो भी नहीं खा सकता था। उसकी यह बात बहुत परेशान करने लगी तब उसको अपनी मां की कही बातें याद आने लगी कि बेटा और चीजों के साथ मीठा भी बहुत जरूरी होता है। उसको वो सारी बातें याद आने लगीं। उसको याद आने लगा कि किस तरह से वह मां के बनाये हुए हलवे को भी डस्टबीन में डाल दिया करता था लेकिन अब उसके पास पछताने के सिवाय कुछ नहीं था। अब वह चाह कर भी मीठा नहीं खा सकता था और ना ही अब वह अपनी पसंद के फास्ट फूड भी खा सकता था। अब उसकी समझ में आया कि उसके माता-पिता सन्तुलित एवं पौष्टिक आहार के लिए क्यों जोर देते थे।

शुद्ध आचरण ही जीवन है

पदम चन्द गांधी
आमंत्रित रचनाकार

आचरण जीवन की साक्षात अनुभूति है। जब बाह्य एवं अन्तर का भेद खत्म हो जाता है तभी आचरण का उद्‌भव होता है। इसके लिए मनोमन्थन आवश्यक है। जीवन धर्म के शाश्वत तत्व का अनुसंधान करना तथा जीवन में उतारना ही शुद्ध आचरण है। आचार से आचरण बनता है। जीवन में कुछ चीजें जानने योग्य हैं जिसे 'ज्ञेय' कहते हैं। कुछ चीजें छोड़ने योग्य हैं जिसे 'हेय' कहते हैं तथा जीवन में कुछ चीजें ग्रहण करने योग्य हैं उन्हें 'उपादेय' कहते हैं अर्थात जानकर, परखकर, सारभूतता को ग्रहण किया जाता है, वही आचरण और चरित्र भी वही है। मोक्ष मार्ग के तीन साधन सम्यक् ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चरित्र बताये गये हैं। ज्ञान के बोध से, दर्शन की परख से, व्यक्ति उसे ग्रहण करने एवं छोड़ने की क्षमता को तोलता है फिर उसे जीवन में अंगीकार करता है। वही शुद्ध आचरण है।

आत्मा के अस्तित्व की पहचान हो जाने पर और आत्मा के स्वरूप का सही सही ज्ञान होने पर भी जब तक उस ज्ञान के अनुसार आचरण नहीं किया जायेगा तब तक साधक की साधना परिपूर्ण नहीं हो सकेगी। और इस उपलब्धि के साथ आचरण आवश्यक है। हम यह विश्वास करते हैं कि आत्मा है। सम्यक् दर्शन होने का फल यह है कि आत्मा का अज्ञान, ज्ञान में परिणित होना। आत्मतत्व पर विश्वास हो, वह विश्वास विचार में बदले और विचार आचार में बदले तभी साधना पूर्ण हो सकती है।

हमें अपने विचारों की शुद्धता को देखना है क्योंकि इन विचारों का जीवन से गहरा सम्बन्ध है। व्यक्ति जैसा सोचता है वैसा ही करता है। ये विचार ही हैं जो उस व्यक्ति को शुद्ध आचरण के लिए प्रेरित करते हैं। उसके व्यक्तित्व का विकास करते हैं। जिस तरह के विचारों के सम्पर्क में वह रहता है उसका व्यक्तित्व वैसा ही बन जाता है। चतुर तो वह है जो अच्छे विचारों को पकड़ लेता है, विशुद्धता भी कुछ और नहीं विचारों की सम्यक्तता को ग्रहण करने की काबिलियत का नाम है। मानव से महामानव शुद्ध आचरण से ही बन पाये हैं। अच्छा व्यक्ति वह है जो अपने शुद्ध विचारों को भटकने और बिखरने के लिए नहीं छोड़ता वरन् इन्हें आचरित करता है। उसके ये उच्च और आदर्श विचार ही आत्मा का बिम्ब और प्रतिबिम्ब होते हैं जो शुद्ध आचरण के बिना सम्भव नहीं है।

हम राजस्थानी

मदनलाल कोली
आमंत्रित रचनाकार

अरावली पर हम फसल ऊगाते
आबू पर्वत पर दौड़ हम लगाते
गंगनहर का पीते पानी
मेहनत में पीछे नहीं हम राजस्थानी

गोडावण को संरक्षण देते
ऊंटनी का दूध भी हम पी लेते
मृग मारने की करने नहीं देते नादानी
खेजड़े को कल्पवृक्ष मानते हम राजस्थानी

मरूस्थल में बसाते इन्द्रागांधी नहर
33 जिला बनाते बड़े बड़े शहर
हर जिला-शहर की बात निराली
देशप्रेमी बने रहते हम राजस्थानी

पीपाजी, गोगाजी, तेजाजी, रामदेव हमारे लोकदेवता
बुराई पर अच्छाई विजय की शिक्षा देते यह देवता
पानी को अमृत समझते हम रेगिस्तानी
सबसे बड़ी सरहद की रक्षा करते हम राजस्थानी

चूरू, सीकर, झुन्झुनूं क्षेत्र है शेखावाटी
भोजन हमारा श्रेष्ठ चूरमा दाल बाटी
गुलाबी नगरी जयपुर को बनाते हम राजधानी
घोटालों से बचकर रहते हम राजस्थानी

बांगड में भी फसल उगाते, मारवाड़ में धान
ढुढाड, मेवात, हाड़ौती और मेवाड़ हमारी शान
देखो बनास, लूणी और चम्बल की मेहरबानी
नदिया तट पर तीर्थ बनाते हम राजस्थानी

यहां की माटी में है महाराणा प्रताप की शक्ति
कम नहीं है करमाबाई, डालीबाई और मीराबाई की भक्ति
पद्मनी के जौहर की यहां बन गयी कर्मस्थली
नारी शक्ति को नमन करते हैं हम राजस्थानी

मेहमानों को भगवान मानकर बनाते नया परिवेश
आमंत्रित करते उनको कहते पधारो म्हारे देश
सारी दुनिया में अपनी जगह बनाते हम हिन्दुस्तानी
देश को सोने की चिड़िया बनाते हम राजस्थानी

धार्मिक सद्भावना के स्थान, रुणिचा, ददरेवा और अजमेर
कहते हैं हम सभी को, आओ राजस्थान, करो मत देर
मरुस्थल में बने रहते हम सभी रेगिस्तानी
ऊँट को ही जहाज मानते हम राजस्थानी

नदियों पर हम बांध बनाते, पहाड़ों पर किले
प्रेम हमारा ऐसा कि शत्रु से भी गले मिलते
आतंकवादी, देशद्रोही को करने नहीं देते मनमानी
देश को अखण्ड भारत बनाते हम राजस्थानी

राजस्थान के 33 जिलों की अलग-अलग है बोली
सब मिल जुल रहते यहां पर एकता की बनते मिसाल
नृत्य करते गेर, घूमर, गोल गादेड़ा और तेरा ताली
मेले, उत्सवों में मनोरंजन करते हम राजस्थानी।

हिंदी दिवस समारोह-2021

महालेखाकार भवन में स्थित चारों कार्यालयों - कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान, जयपुर, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर एवं कार्यालय प्रधान निदेशक (केंद्रीय) शाखा कार्यालय जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 14.09.2021 से 28.09.2021 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया। जिसका शुभारंभ दिनांक 14.09.2021 को तथा समापन दिनांक 28.09.2021 को उच्चाधिकारियों द्वारा किया गया।

पखवाड़े की शुरूआत दिनांक 14.09.2021 को हिंदी दिवस के अवसर पर कार्यालय परिसर में हिंदी की सुक्तियों के पोस्टर, बैनर डिजिटल डिस्प्ले लगाकर तथा माननीय गृह मंत्री जी के राजभाषा संदेश का वाचन एवं राजभाषा प्रतिज्ञा दिलवाई गई तथा चारों कार्यालयों के प्रत्येक अनुभाग को राजभाषा संदेश व राजभाषा प्रतिज्ञा ई-मेल से भी भिजवाई गई। दिनांक 15.09.2021 से 23.09.2021 के मध्य हिंदी टिप्पण-प्रारूपण, हिंदी लघुकथा लेखन, हिंदी स्व-रचित कविता लेखन, हिन्दी में कम्प्यूटर पर यूनिकोड में कार्य प्रतियोगिता एवं हिंदी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें चारों कार्यालयों के प्रतिभागियों ने बेहद उत्साह से भाग लिया।

समापन समारोह का प्रारम्भ दिनांक 28.09.2021 को कार्यालय प्रधानों की अध्यक्षता में माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं उनके चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन से किया गया और साथ ही माँ सरस्वती की वंदना भी की गई।

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह दिनांक 28.09.2021 को कोविड-19 के संबंध में जारी गाईडलाइन के अनुसार बहुत ही संक्षिप्त स्तर पर आयोजित किया गया जिसमें प्रतियोगिता के विजेताओं एवं चारों कार्यालयों के उच्चाधिकारी ही सम्मिलित हुए। माननीय कार्यालय प्रधानों द्वारा प्रतियोगिता के समस्त विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। साथ ही मूल शब्द लेखन प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत चयनित कार्मिकों को भी पुरस्कृत किया गया तथा सभी विजेताओं को प्रशस्ति-पत्र भी प्रदान किए गए।

हिन्दी पखवाड़ा-2021 के अन्तर्गत आयोजित प्रतियोगिताएं एवं उनके परिणाम

क्र.	प्रतियोगिता	निर्णायक	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
		श्री/श्रीमती/सुश्री	श्री/श्रीमती/सुश्री	श्री/श्रीमती/सुश्री	श्री/श्रीमती/सुश्री
1.	हिन्दी स्व रचित काव्य पाठ प्रतियोगिता	रजनीश शर्मा वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी रीतिका मोहन हिन्दी अधिकारी विपुल गुप्ता सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	मनोज कुमार एम.टी.एस.	कैलाश आडवानी पर्यवेक्षक	हनुमान गुप्ता सहायक लेखाधिकारी
2.	हिन्दी में कम्प्यूटर पर यूनिकोड में कार्य प्रतियोगिता	जयसिंह रैगर वरिष्ठ लेखाधिकारी हेमन्त अग्रवाल सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी वीरेन्द्र सिंह सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	सन्तोष बुला सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	अमित सिंघल सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	मोटा राम सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)
3.	हिन्दी लघु कथा लेखन प्रतियोगिता	राजेश चौधरी वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी ओम प्रकाश पारीक सहायक लेखाधिकारी कुलदीप जोशी सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	शिवपाली खण्डेलवाल सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	रवि शंकर विजय सहायक पर्यवेक्षक	रूचि गुप्ता ऑडिट क्लर्क
4.	हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता	मनीष शर्मा वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी अरूण कुमार शर्मा वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी अशोक कुमार यादव सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	चौधरी सरोज हनुमान सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)	अमित गोयल वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	अनन्य पंवार वरिष्ठ लेखापरीक्षक

5.	हिन्दी टिप्पण-प्रारूपण प्रतियोगिता	मनोहर लाल मीना वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी बाल कृष्ण शर्मा वरिष्ठ लेखाधिकारी रंजना भण्डारी वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	भावना शर्मा सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	अरूण खाण्डल सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	भगवान दास सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

(सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ायेंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंद!

सरकारी कामकाज मूल रूप से हिन्दी में करने पर मूल शब्द लेखन प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत पुरस्कृत कार्मिक

दो– प्रथम पुरस्कार ₹ 5000/– प्रत्येक को

1.	श्री सुभाष चतुर्वेदी	सहायक लेखाधिकारी (आर.टी.)
2.	श्री रणवीर सिंह जाट	वरिष्ठ लेखाकार

तीन– द्वितीय पुरस्कार ₹ 3000/– प्रत्येक को

1.	श्री महेश कुमार शर्मा	लेखाकार
2.	श्रीमती हेमलता सोनी	वरिष्ठ लेखाकार
3.	श्री हरीश चंद्र गुप्ता	सहायक पर्यवेक्षक

दो– तृतीय पुरस्कार ₹ 2000/– प्रत्येक को

1.	श्रीमती विद्या	लिपिक
2.	श्री मनोज कुमार	सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

दो मूल्यांकन समिति के सदस्य, मानदेय ₹ 1000/– प्रत्येक को

1.	श्री ईपन टी चेरीयन	वरिष्ठ लेखाधिकारी
2.	श्री कैलाश पवांर	वरिष्ठ लेखाधिकारी

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

1. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्ट, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट व सरकारी कागजात, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचनाएं और निविदा प्रपत्र द्विभाषिक रूप में (अंग्रेजी और हिंदी) जारी किए जाएं। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 6 के अंतर्गत ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति का दायित्व यह सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी,दोनों भाषाओं में तैयार, निष्पादित अथवा जारी किए जाएं।

2. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 के अनुसार केंद्र सरकार के कार्यालयों से हिंदी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना है।

3. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अनुसार केंद्र सरकार के जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत कार्मिकों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया हो, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएं।

4. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अनुसार केंद्र सरकार, ऐसे अधिसूचित कार्यालयों के हिंदी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को टिप्पण, प्रारुपण और अन्य उन शासकीय कार्यों को केवल हिंदी में करने के लिए आदेश जारी कर सकती है, जैसा कि आदेश में विनिर्दिष्ट हो।

5. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 के अनुसार सभी मैनुअल, संहिताएं और असांविधिक प्रक्रिया साहित्य, रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक, नामपट्ट, साइन बोर्ड, पत्र शीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें भी हिंदी और अंग्रेजी (डिग्लॉट फॉर्मेट) में होंगी। तदनुसार, केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा है कि वे सभी मैनुअल, संहिताओं, एवं प्रक्रिया संबंधी असांविधिक साहित्य से संबंधित अन्य प्रक्रियात्मक साहित्य अनुवाद के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में भेजें।

6. राजभाषा नियम,1976 के नियम 12 के अनुसार केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह यह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के प्रावधानों तथा इनके अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो तथा इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त एवं प्रभावकारी जांच बिंदु बनाए जाएं।

7. अधीनस्थ सेवाओं की भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी के अनिवार्य प्रश्न-पत्र को छोड़कर शेष विषयों के प्रश्न- पत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए और ऐसे प्रश्न-पत्र द्विभाषी रूप से, हिंदी तथा अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराए जाएं। साक्षात्कार या मौखिक परीक्षा में उम्मीदवारों को हिंदी में उत्तर देने की छूट दी जाए।

8. केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा सभी सेवाकालीन, विभागीय तथा पदोन्नति परीक्षाओं में (अखिल भारतीय स्तर पर परीक्षाओं सहित) अभ्यर्थियों को प्रश्न पत्रों के उत्तर हिंदी में देने का विकल्प दिया जाए। प्रश्न पत्र अनिवार्यतः दोनों भाषाओं, हिंदी और अंग्रेजी, में तैयार कराए जाएं। जहां साक्षात्कार लिया जाना हो, वहां अभ्यर्थियों को पूछे गए प्रश्नों का उत्तर हिंदी में देने की छूट दी जाए।

9. सभी प्रकार की वैज्ञानिक/तकनीकी संगोष्ठियों तथा परिचर्चाओं आदि में वैज्ञानिकों आदि को राजभाषा हिंदी में शोध पत्र पढ़ने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए। उक्त शोध पत्र संबंधित मंत्रालय/विभाग और कार्यालय आदि के मुख्य विषय से संबंधित हों।

10. 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों में सभी प्रकार का प्रशिक्षण, चाहे वह अल्पावधि का हो अथवा दीर्घावधि का, सामान्यत: हिंदी माध्यम से हो । 'ग' क्षेत्र में प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण सामग्री हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जाए और प्रशिक्षणार्थी की मांग के अनुसार हिंदी या अंग्रेजी में उपलब्ध कराई जाए।

11. केंद्र सरकार के कार्यालयों में जब तक हिंदी टंककों व हिंदी आशुलिपिकों से संबंधित निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लिए जाते, तब तक उनमें केवल हिंदी टंकक व हिंदी आशुलिपिक ही भर्ती किए जाएं।

12. अंतरराष्ट्रीय संधियों और करारों को अनिवार्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराया जाए। विदेशों में निष्पादित संधियों और करारों के प्रामाणिक अनुवाद तैयार करा कर रिकॉर्ड के लिए फाइल में रखे जाएं।

13. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित बैंकों की शाखाओं में निम्नलिखित कार्य हिंदी में किए जाएं :

ग्राहकों द्वारा हिंदी में भरे गए आवेदनों और ग्राहकों की सहमति से अंग्रेजी में भरे गए आवेदनों पर जारी किए जाने वाले मांग ड्राफ्ट, भुगतान आदेश, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, सभी प्रकार की सूचियां,

विवरणियां,सावधि जमा रसीदें, चैक बुक संबंधी पत्रादि, दैनिक बही, मस्टर रोल, प्रेषण बही, पास बुक, लॉग बुक में प्रविष्टियां, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र, सुरक्षा एवं ग्राहक सेवा संबंधी कार्य, नये खाते खोलना, लिफाफों पर पते लिखना, कर्मचारियों के यात्रा भत्ते, अवकाश, भविष्य निधि, आवास निर्माण अग्रिम, कर्मचारियों के लिए चिकित्सा सुविधाओं संबंधी कार्य, बैठकों की कार्यसूची, कार्यवृत्त आदि।

14. हिंदीतर राज्यों में बोर्ड, साइन बोर्ड, नामपट्ट तथा दिशा संकेतकों के लिए क्षेत्रीय भाषा, हिंदी तथा अंग्रेजी, इसी क्रम में, प्रयोग की जानी चाहिए।

15. अनुवाद कार्य तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में अनिवार्य अनुवाद प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए। ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अनुवाद के प्रशिक्षण के लिए नामित किया जा सकता है, जिन्हें स्नातक स्तर पर हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं का ज्ञान हो तथा जिनकी सेवाओं का उपयोग कार्यालय द्वारा अनुवाद कार्य के लिए किया जा सकता है।

16. अनुवादकों को मानक शब्दकोश (अंग्रेजी-हिंदी,हिंदी-अंग्रेजी) तथा अन्य तकनीकी साहित्य और शब्दावलियों जैसी सहायक सामग्रियां उपलब्ध कराई जाए।

17. भारतीय प्रशासनिक सेवा और अन्य अखिल भारतीय सेवा के अधिकारियों के लिए लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में प्रशिक्षण के दौरान हिंदी भाषा का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाता है ताकि सरकारी कामकाज में वे इसका प्रयोग कर सकें। तथापि, अधिकांश अधिकारी सेवा में आने के पश्चात सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग नहीं करते। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों में सही संदेश नहीं जाता। परिणामस्वरूप, सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग अपेक्षित मात्रा में नहीं हो पाता। केंद्र सरकार के कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारियों का यह संवैधानिक दायित्व है कि वे सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरणा मिलेगी तथा राजभाषा नीति के अनुपालन में गति मिलेगी।

18. केंद्र सरकार के सभी कार्यालय अपने केंद्रीय सेवाओं के प्रशिक्षण संस्थानों में राजभाषा हिंदी में प्रशिक्षण की व्यवस्था उसी स्तर पर करें, जिस स्तर पर लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में कराई जाती है और अपने विषयों से संबंधित साहित्य का सृजन हिंदी में करवाएं, जिससे प्रशिक्षण के बाद अधिकारी अपना सरकारी कामकाज सुविधापूर्वक राजभाषा हिंदी में कर सकें। सभी प्रशिक्षण कार्यक्रम मल्टीमीडिया प्रॉजेक्टर, लैपटॉप आदि के माध्यम से आडियो/विजुअल रूप में तैयार कराए जाएं।

19. केंद्र सरकार के सभी कार्यालय हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए चलाई गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का अपने कार्यालयों में व्यापक प्रचार-प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी इन योजनाओं का लाभ उठा सकें और सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो।

20. विभिन्न कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन के संबंध में नए दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। नए दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्यशाला की न्यूनतम अवधि एक कार्य दिवस की होगी। कार्यशाला में न्यूनतम दो तिहाई समय कार्यालय से संबंधित विषयों पर हिंदी में कार्य करने का अभ्यास करवाने में लगाया जाए।

21. प्रशिक्षण और कार्यशालाओं सहित राजभाषा हिंदी संबंधी कार्य कर रहे अधिकारियों/ कर्मचारियों को कार्यालय में बैठने के लिए अच्छा व समुचित स्थान एवं अन्य आवश्यक सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएं ताकि वे अपने दायित्वों का निर्वाह ठीक तरह से कर सकें।

22. केंद्र सरकार के सभी कार्यालय अपने दायित्वों से संबंधित विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने तथा अपने विषयों से संबंधित शब्द भंडार को समृद्ध करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।

23. हमें अपने कार्य-व्यवहार में आम जीवन में प्रचलित शब्दों के प्रयोग पर बल देना चाहिए ताकि सामान्य नागरिक सरकारी नीतियों/कार्यक्रमों के बारे में सरल हिंदी में जानकारी प्राप्त कर सकें।

24. केंद्र सरकार के कार्यालय अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य का माहौल तैयार करने के लिए हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं। इन पत्रिकाओं में कार्यालय के सामान्य कार्यकलापों तथा उस कार्यालय के कामकाज से संबंधित मौलिक आलेख प्रकाशित किए जाएं। साथ ही राजभाषा नीति के प्रमुख प्रावधानों का भी उल्लेख अवश्य हो। केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन पत्रिकाओं के ई-वर्जन तैयार करें और इन्हें राजभाषा विभाग द्वारा अपनी वेबसाइट www.rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध कराए गए प्लेटफॉर्म ''ई-पत्रिका पुस्तकालय'' पर अपलोड करें ताकि गृह-पत्रिकाएं पाठकों को सहज तथा सरल तरीके से प्राप्त हो सकें।

25. केंद्र सरकार के कार्यालयों के कंप्यूटरों में यूनिकोड की सुविधा हो ताकि कंप्यूटरों पर हिंदी में भी काम किया जा सके।

26. यह देखा गया है कि अनेक विभागों द्वारा वेबसाइट पर या तो सूचना हिंदी में नहीं दी जाती या कुछ मामलों में यह पूर्णतया हिंदी में उपलब्ध नहीं है। अतः वेबसाइट हिंदी में विकसित और नियमित रूप से अद्यतित करवाएं।

27. कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा का संवर्ग गठित होना चाहिए, जो कि कुल पदों के अनुरूप हो। मंत्रालयों/विभागों के अधीनस्थ कार्यालयों के हिंदी पदाधिकारियों को केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के समान वेतनमान व पदनाम दिए जाएं।

28. राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से हर वर्ष कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए 5 दिवसीय बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करवाया जाता है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अधिक से अधिक अधिकारियों/ कर्मचारियों को नामित करें। प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा होने के बाद प्रशिक्षु कंप्यूटर पर हिंदी में काम कर सकेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान की वेबसाइट www.chti.rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है।

29. सभी मंत्रालय/विभाग हिंदी संगोष्ठी का आयोजन करें।

30. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा कोई भी गैर सरकारी संस्था केंद्र सरकार के कर्मचारियों को राजभाषा का प्रशिक्षण देने के लिए अधिकृत नहीं की गई है। राजभाषा विभाग के अंतर्गत प्रशिक्षण केंद्र पहले से ही देश भर में काम कर रहे हैं जो केंद्र सरकार के अधिकारियों व कर्मचारियों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण नि:शुल्क देते हैं एवं राजभाषा पर विचार-विमर्श के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करते हैं। राजभाषा विभाग के निर्देशों के अनुसार केंद्र सरकार के सभी कार्यालय संबंधित कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्यशालाएं आयोजित करते हैं। राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर अंग्रेजी के अतिरिक्त 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी भाषा का प्रशिक्षण ऑनलाइन दिए जाने की सुविधा उपलब्ध है। अतः गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा आयोजित किए जा रहे राजभाषा के प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए सरकारी कोष से अनावश्यक धन खर्च करना उचित नहीं है।

31. राजभाषा विभाग द्वारा आधुनिक ज्ञान/विज्ञान की विभिन्न विधाओं में मौलिक रूप से हिंदी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने एवं राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ''राजभाषा गौरव पुरस्कार'' दिए जाते हैं। राजभाषा के प्रयोग में बेहतर प्रगति दर्ज करने वाले मंत्रालय/विभाग, सार्वजनिक क्षेत्र के

उपक्रम, बोर्ड/स्वायत्त निकाय/ट्रस्ट आदि, राष्ट्रीयकृत बैंक, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा हिंदी गृह पत्रिकाओं के लिए ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'' राजभाषा विभाग द्वारा दिए जाते हैं। इन दोनों पुरस्कार योजनाओं की जानकारी राजभाषा विभाग की वेबसाइट www.rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है।

32. राजभाषा विभाग ने अपनी वेबसाइट पर विभिन्न संस्थाओं के लिंक उपलब्ध कराए हैं जिनके माध्यम से इन संस्थाओं की शब्दावली देखी जा सकती है। इस संबंध में यदि कार्यालयों द्वारा कोई अपनी शब्दावली तैयार की गई है तो वे उसे राजभाषा विभाग से साझा करें ताकि अन्य कार्यालय भी लाभान्वित हो सकें।

33. राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर ''ई-सरल हिंदी वाक्यकोश'' शीर्षक के अंतर्गत सामान्यत: अंग्रेजी में प्रयोग होने वाले वाक्यों के हिंदी अनुवाद दिए गए हैं जिनके प्रयोग से अधिकारी फाइलों पर सामान्य टिप्पणियां आसानी से हिंदी में लिख सकते हैं।

34. केंद्र सरकार के कार्यालयों की मांग पर केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से भी हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण दिया जाता है। केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा भी अनुवादकों को प्रशिक्षण देने के लिए इसी प्रकार के प्रबंध किए गए हैं।

35. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने केंद्रीय हिंदी समिति की 31वीं बैठक के कार्यवृत्त में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए गए सुझावों को पुन: बल दिया है - सरकारी हिंदी और सामाजिक हिंदी के अंतर को कम करना; देश की दूसरी भाषाओं से हिंदी को और समृद्ध करने के लिए उपाय करना - दूसरी भाषाओं के अच्छे शब्दों को हिंदी में ग्रहण करना, दूसरी भारतीय भाषाओं से दस-दस अच्छे शब्दों को खोजकर हिंदी भाषा में जोड़ना; हिंदी में अनुवाद सरल भाषा में सुनिश्चित करना जिससे सरकारी भाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में बाधक नहीं, सहायक हो।

36. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने हाल ही में भारत सरकार के सभी सचिवों/विभिन्न सरकारी संगठनों के प्रमुखों से आग्रह किया है कि जब वे प्रत्येक माह वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक की अध्यक्षता करें तो वे उनमें हिंदी में सरकारी काम-काज में हुई प्रगति की भी समीक्षा करें और अपने संगठन में राजभाषा अधिनियम तथा नियमों के विभिन्न उपबंधों के कार्यान्वयन के बारे में चर्चा करें। साथ ही, संयुक्त सचिव (प्रशासन)/संगठन के प्रशासनिक प्रमुख को हिंदी कार्यान्वयन का तथा वर्ष की प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करने का उत्तरदायित्व सौंपा जाए।

अध्यक्ष एवं प्रधान महालेखाकार श्री डी.पी. यादव,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान, जयपुर हेतु शील्ड प्राप्त करते हुए

''क'' वर्ग में प्रथम (वर्ष 2019–20 हेतु)

मरूलेखा वातायन
आर.एन.आई. 95305/98 वर्ष– 25, अंक : 69

मैनाल जलप्रपात, चित्तौड़गढ़